भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 **जुलाई** 2003 (फरवरी से जून 2003, अंक 2 से 6 तक का प्रकाशन नहीं हुआ) **अंक** 7

दिल्ली की मजबूरियाँ

साहित्य में उपजी खेमेबाजी और अन्य तरह की संकीर्णताओं से न तो साहित्य का भला होता है और न ही इससे कोई लेखक ही बड़ा बनता है।

दिल्ली न केवल देश की राजधानी है, बल्कि साहित्य का केन्द्र भी हो गई है, जबकि पहले ऐसा नहीं था। लेकिन इससे फायदा कम, नुकसान अधिक हुआ। पहले साहित्य की सत्ता विकेन्द्रित थी। वह बनारस, इलाहाबाद, पटना, कलकत्ता, भोपाल आदि जगहों में फैली हुई थी। इसका सबसे बड़ा लाभ यह था कि साहित्य के साथ संस्कृतियाँ जुड़ी हुई थीं। संस्कृतियों को अलग कर भला साहित्य कैसे बचाया जा सकता है।

दिल्ली की अपनी मजबूरियाँ हैं। यहाँ रहकर किसी संस्कृति के विषय में सोचना और सम्बन्धित संस्कृति में रहकर उसके विषय में सोचना, दोनों में बड़ा फर्क है। यह ठीक है कि दिल्ली में सभी संस्कृतियों के लोग आए और यह भी कि जितने भी लेखक यहाँ आए, वे कोई कम प्रतिभावान नहीं हैं, बल्कि देश की लगभग सारी बड़ी प्रतिभाएँ यहाँ आ मिली हैं, फिर भी मेरा मानना है कि कोई बड़ा काम दिल्ली में रह कर करना कुछ ज्यादा ही कठिन है।

दिल्ली से दूर रहा जाए यह आवश्यक नहीं है, लेकिन लेखकों को चाहिए कि दिल्ली आने से पहले वह कुछ बड़ा काम कर लें। दिल्ली की अपनी मजबूरियाँ हैं। यहाँ इतने प्रपंच और भागमभाग है कि यहाँ कोई लेखक तभी स्थाई काम कर सकता है, जब इन प्रपंचों से दूर होकर कहीं एकान्त में साहित्य की साधना करे।

दिल्ली देश की राजधानी है। जब यहाँ की राजनीति पूरे देश को प्रभावित कर सकती है तो साहित्य की राजनीति क्यों नहीं प्रभावित करेगी। देश के दूसरे हिस्सों में लिख रहे लोग दिल्ली से अपना सूत्र जोड़े रखने के लिए यहाँ के किसी न किसी साहित्यिक प्रपंची से तो जुड़े ही रहना चाहते हैं। इससे दोनों का फायदा है। दिल्ली में बैठा व्यक्ति महसूस करता है कि उसकी छाया और जड़ें दिल्ली से बाहर भी फैली हुई हैं और बाहर रहने वाला दिल्ली से जुड़कर यह महसूस करता है कि उसका साहित्य प्रतिनिधि दिल्ली में बैठ कर उसके लाभ की बातें सोच रहा है।

— प्रभाकर श्रोत्रिय

सम्पादक 'नया ज्ञानोदय'

साहित्यकारों का बालीवुड
दिल्ली

दिल्ली देश की राजधानी है, राजधानी यानी सत्ता का केन्द्र। राजधानी के विविध आयाम, सर्वसम्पन्न साधन सुविधा। राजधानी में प्रतिष्ठित होने की महत्वाकांक्षा। राजनीतिज्ञ, कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, उद्योगपति सभी राजधानी की ओर दौड़ते हैं। अपनी महत्वाकांक्षा के लिए लोगों के अपने-अपने गुट बन जाते हैं। दिल्ली में साहित्यकारों के अनेक गुट हैं। उनमें कोई मठाधीश हैं तो कुछ ब्रह्मा, विष्णु महेश कहे जाते हैं। रविन्द्र कालिया इन्हें कफ वित्त वात कहते हैं। इससे ही इनका स्वरूप प्रगट होता है। द्वन्द्व और अन्तर्द्वन्द्व, यह दिल्ली के साहित्यकारों की नियति है।

सिने क्षेत्र में अभिनेता, निदेशकों, फिल्म निर्माताओं की जो स्थिति है, विकृति है, आज लगभग वही दिल्ली में देखने को मिल रही है। भारत की राजधानी में लेखकों, प्रकाशकों, पत्रकारों, पत्र-पत्रिकाओं की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है। दिल्ली में प्रकाशकों की संख्या जितनी तेजी से बढ़ी है, उस अनुपात में हिन्दी पुस्तकों के विक्रय संस्थान नहीं बने। यूनेस्को ने दिल्ली को वर्ष 2003-04 के लिए विश्व पुस्तक राजधानी घोषित किया है। ऐसा क्यों, क्योंकि दिल्ली में पुस्तकें देश और प्रदेश में थोक के भाव बेंची जाती हैं। सरकारी संस्थानों के अधिकारियों तक पहुँच बनाइये, सुविधा शुल्क जो स्वीकृत कमीशन के अतिरिक्त तीस से चालीस प्रतिशत तक दीजिए और जो चाहिए खपा लीजिए। प्रचार के लिए दिल्ली में पत्र-पत्रिकाओं की कमी नहीं है। देश के अन्य प्रदेशों में पत्रों ने तो पुस्तक परिचय, समीक्षा प्रकाशित करना बन्द ही कर रखा है। अत: लेखक, प्रकाशक, पत्रकार, प्रशासन इन सबके संयोग से दिल्ली साहित्यकारों का बालीवुड बन गया है और अब विश्व पुस्तक राजधानी।

आज प्रशासनिक अधिकारियों में भी साहित्यकारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, कुछ ही समय में पुस्तक जगत में वे अपनी पहचान बना लेते हैं। प्रकाशक भी उनकी तलाश में रहते हैं। प्रदेश की राजधानियों से इनके सूत्र जुड़े होते हैं। परिणाम यह है कि पुस्तकें नहीं माल पुस्तकालयों में खपाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश जो साहित्यकारों और साहित्यिक प्रकाशकों में अग्रणी था, उनकी पुस्तकें क्या खरीदी जाती हैं? सत्ता के गलियारे में घूमनेवाले तथाकथित अधिकारी तथा प्रकाशक अपना माल खपा रहे हैं। परिणाम है कि पुस्तकालय कबाड़खाना बनते जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के विशेषाधिकारी पुस्तकालय की सूची से प्रदेश के ही नहीं देश के भी कितने प्रतिष्ठित लेखक प्रकाशक खारिज हैं, क्योंकि वे अपेक्षित पहुँच बनाने में सक्षम नहीं हैं।

सूचना का अधिकार के अन्तर्गत क्या क्रय की गयी पुस्तकों की सूची देश-प्रदेश के पुस्तक क्रय विभागों से जारी हो सकेंगी? इस गोरख-धन्धे को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय और राजा राममोहन राय लायब्रेरी फाउण्डेशन तथा पुस्तकों से सम्बद्ध अन्य संस्थानों को शिक्षा के इस महत्त्वपूर्ण माध्यम में बौद्धिक पारदर्शिता लाने की जरूरत है।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

स्मृति-शेष

शताब्दी का कवि
हरिवंशराय बच्चन

चाँदनी पिछले पहर की पास में जो सो गई है
रात आधी हो गई है
चाँद सितारों मिलकर रोओ।

'प्रतीक्षारत' 'मधुशाला' का गायक **हरिवंशराय बच्चन** की प्रतीक्षा समाप्त हुई, 17-18 जनवरी 2003 की मध्य रात्रि 11.40 बजे कवि अनंत की यात्रा पर चला गया जहाँ से कोई लौटता नहीं। प्रकृति स्तब्ध है

जमीन है न बोलती
न आसमान बोलता।

लोकगायक हरिवंशराय बच्चन चला गया किन्तु उसकी कृतियाँ शेष रह गईं जिनमें वह युगों-युगों तक जीवित रहेगा।

बच्चनजी का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद में हुआ। बच्चनजी के पिता प्रतापनारायण ललितपुर के निवासी थे। बाद में इलाहाबाद आ गये जहाँ 'पायनियर' कार्यालय में काम करते थे। उनका परिवार अत्यन्त धर्मपरायण था। उनकी पत्नी सुरसती के बच्चे अल्पजीवी होते थे। कहते हैं कि सुरसती गर्भवती हुईं तो लोगों ने सलाह दी हरिवंशपुराण सुनें। कई घंटे पति-पत्नी गाँठ जोड़कर परिवार के पुरोहित से हरिवंश पुराण की कथा सुनते—

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

और इस प्रकार बच्चनजी का जन्म हुआ और नामकरण हुआ 'हरिवंश'। सुरसती पुत्र बच्चन की माता उनके लिए साक्षात सरस्वती थी।

उनकी पहली पत्नी श्यामा अपनी यक्ष्मा पीड़ित माता की सेवा करते स्वयं यक्ष्मा से पीड़ित हो गईं जो बच्चनजी के अभावों एवं कष्टों की संगिनी थी। उनकी मार्मिक स्मृति बच्चन की अनेक कविताओं में हैं।

बच्चनजी के संघर्ष की संवेदनशील अभिव्यक्ति उनकी रचना में है। उनमें भी लय है, गति है जो श्रोता के कंठों पर उतर आती है। उन्होंने जीवन को, लोक को निकट से देखा है। उनके काव्य में लोक संगीत ध्वनित होता है। होली पर बच्चन याद आते हैं—रंग बरसे, भींगे चुनरिया। उनके काव्य में अपने पैतृक गाँव ललितपुर की बुंदेलखंडी का प्रभाव है।

पायनियर में गस्ती एजेन्ट के दिनों में 'मधुशाला' लिखी। अभावों और विरोधों को भुलाने के लिए 'मधुशाला' में डूबते रहे। अभ्युदय प्रेस में क्लर्की और अग्रवाल विद्यालय में मुदर्रिसी करते हुए मधुबाला के गीत गाये थे। पुस्तकें सुषमा निकुंज के नाम से स्वयं प्रकाशित की, हजारों में बिकी, इसके लाभ से घर चला। बच्चनजी का मन दो स्तरों में विभक्त था—एक टुकड़ा भावुकता, भावना, कल्पना, सृजन की ओर झुकता था, दूसरा उसे यथार्थ वस्तुस्थिति, कर्त्तव्य और औचित्य की ओर खींचना चाहता था। उनका प्रारम्भिक जीवन उस दीपक के समान था। जिसके नीचे अन्धकार था और पल-पल कर अपने को जलाकर प्रकाश देता था। ''**कंटकों से तन छिदा है, हे कुंभकार, मेरी मिट्टी को और न अब हैरान करो, कहने की सीमा होती है, सहने की सीमा होती है।**''

सर्वप्रथम दिसम्बर 1933 की 'सरस्वती' में 'मधुशाला' की 10 रुबाइयाँ छपीं, इसी समय बच्चनजी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिवाजी हाल में 'मधुशाला' सुनाई। स्व० अक्षयकुमार जैन उस समय विश्वविद्यालय के छात्र थे। उनके शब्दों में ''उस वक्त की भावना को कुछ शब्दों में बता सकना कठिन है। बस यही लग रहा था कि वे जो कुछ कह रहे हैं, वह हम सब कहना चाहते थे, पर न हमारे पास शब्द थे और न हममें साहस। उनके शब्दों से जैसे हमारे बन्धन खुल रहे थे।''

प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में नियुक्ति के पूर्व बच्चनजी ने कितने कष्ट झेले, संघर्ष किये। उसकी कहानी चार खण्डों में प्रकाशित उनकी जीवनी में है—बेजोड़ जीवनी है, एक युग, एक व्यक्ति, एक समाज की कहानी है। उपन्यास से भी कहीं अधिक रोचक।

क्या भूलूँ क्या याद करूँ चार जिल्दों में प्रकाशित बच्चनजी की जीवनी पर बिरला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती सम्मान भेंट करते समय फाउंडेशन की ओर से की गई प्रशस्ति—

''यह केवल बच्चन के जीवन और उनकी कविता की अंतरधारा का वृत्तांत ही नहीं, उनके युग और परिवेश के परिदृश्य का प्रभावी प्रामाणिक दस्तावेज भी है। कविता से खेलती हुई-सी गद्य की जीवंत भाषा में कथा, काव्य, संस्मरण और निबन्ध के तत्त्वों को अपने कलेवर में सँजोए बच्चन की आत्मकथा समग्र भारतीय साहित्य का एक कालजयी महाकाव्य है।''

बच्चनजी का काव्य आँसुओं में तपाया हुआ स्वर्ण है जो अपनी आभा कभी नहीं खोयेगा। कवि के एकाकी मन की गहन पीड़ा और व्यथा की अभिव्यक्ति उनका काव्य है।

पठनीयता, गेयता और वाचिक परम्परा का यह कवि युग-युगों तक स्मरणीय रहेगा। बच्चनजी का नश्वर शरीर भले ही नहीं रहा किन्तु ध्वनित हो बहु कंठों से गूँज रही उनकी मधुशाला।

श्रीराम वर्मा

नई कविता के हस्ताक्षर **श्रीराम वर्मा** नहीं रहे। 8 फरवरी 2003 को दिल्ली में हृदयगति रूकने से उनका निधन हो गया। वर्माजी हिन्दी कविता की प्रयोगवादी नई कविता धारा के भाषाई दृष्टि से सबसे समर्थ कवियों में एक थे। अज्ञेय द्वारा सम्पादित चौथे सप्तक (1979 ई०) के कवि थे। 1 मार्च 1937 को मऊ (उ०प्र०) के पतनयी गाँव में उनका जन्म हुआ था। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—ग्रीनबिच (1972 ई०), शब्दों की शताब्दी (1977 ई०), आत्मकथा, गली का परिवेश, बूँद की यात्रा (सभी कविता संग्रह), अन्तरिक्ष यात्रा (कहानी संग्रह, 1977 ई०)।

देवेन्द्र सत्यार्थी
यायावर अब नहीं लौटेगा

निरन्तर लोकजीवन की यात्रा करता यायावर **देवेन्द्र सत्यार्थी** अनन्त की यात्रा को चला गया। 21 जनवरी को बाथरूम जा रहे थे, तभी गिर पड़े, सिर में गहरी चोट आई, दस दिन तक अपोलो अस्पताल में भरती रहे। 13 फरवरी को अनन्त की यात्रा को चले गये।

देवेन्द्र सत्यार्थी विलक्षण लोकयात्री थे। उनकी संघर्षशील जीवनयात्रा से प्राप्त विराट उपलब्धियाँ लोक साहित्य के स्मारक हैं। उर्दू के मशहूर कथाकार होते हुए वे 'आजकल' हिन्दी के यशस्वी सम्पादक (1948-56) थे। 'बेला फूले आधी रात', 'धरती गाती है', 'गिदि' लोकगीतों की उनकी सुप्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उन्होंने सारे भारत उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम की यात्रा कर लोकजीवन और लोकसंस्कृति को देखा-परखा और उनका संग्रह किया।

पंजाब में संगरूर में 29.5.1908 को जन्मे देवेन्द्र सत्यार्थी लोकसंस्कृति की खोज में केरल, तमिलनाडु, श्रीलंका, बर्मा, असम, बंगाल सभी प्रदेशों की उन्होंने यात्रा की। महात्मा गाँधी ने उनके काम को भारत की आत्मा की खोज ही नहीं, देश की आजादी का संघर्ष माना था। सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार ''सत्यार्थीजी आदि से अन्त तक एक चिन्तनशील और अग्रगामी संस्कृति दूत के रूप में सदैव हमारी भाषाओं की रंगभूमि पर खड़े रहेंगे।'' वासुदेवशरण अग्रवाल ने उन्हें ''जनपदीय जगत का सच्चा चक्रवर्ती कहा था जिनके रथ का पहिया अपनी ऊँची छाया से ग्रामवासिनी भारतमाता की वन्दना करता हुआ सब जगह फिर आया है।''

उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण उपन्यास, कहानियाँ, संस्मरण के अलावा आत्मकथा भी लिखी। उनके समस्त लेखन के केन्द्र में लोकभूमि का स्वर विद्यमान रहा।

धूल धूसरित पाँवों से अनवरत यात्रा करता देवेन्द्र देवेन्द्र में लीन हो गया। उसकी याद उसके लोकसंस्कृतिजन्य संग्रहों में है, जिसे शताब्दियों तक याद किया जायगा। विनम्र श्रद्धांजलि।

डाक्टर रामनरेश वर्मा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष **रामनरेश वर्मा** का सोमवार 10 मार्च 2003 को निधन हो गया। उनकी आयु 79 वर्ष थी।

शिवानी

शुक्रवार, 21 मार्च 2003 ब्राह्म मुहूर्त की बेला, पौ फटने वाली है, मंद-मंद शीतल बयार बह रही है, मस्जिद में अजान हो रही है, गुरुद्वारे में सबद पाठ हो रहा है, मन्दिर में आरती की घण्टियाँ बज रही हैं **शिवानीजी** ने महाप्रयाण किया।

शिवानीजी की पुत्री इरा पाण्डे ने शिवानीजी के महाप्रयाण का वर्णन किया है। जिसने जीवनपर्यन्त अपनी रचनाओं में प्रकृति और परिवेश को अभिव्यक्त किया महाप्रयाण के समय श्रद्धांजलि अर्पित करने को उपस्थित पुण्य स्वर हैं।

शिवानीजी की पहली रचना 'चौदह फेरे' विश्वविद्यालय प्रकाशन ने प्रकाशित की थी। आज वह क्षण स्मरण हो आता है जब शिवानीजी से प्रथम परिचय हुआ था—

१९६३ की वह मध्याह्न बेला आज भी स्मरण है जब श्रीमती गौरा पंत गोरखपुर में मेरे कार्यालय में पधारीं। अत्यन्त सुन्दर पहाड़ी महिला, सौम्य, सद्भाव एवं स्नेह से परिपूर्ण। उस समय वे 'शिवानी' के रूप में ख्यात नहीं हुई थीं। गोरखपुर में पूर्वोत्तर रेलवे में उनके भाई श्री त्रिभुवन मुख्य सुरक्षा अधिकारी थे। उनके पति श्री शुकदेव पंत नैनीताल में उपशिक्षा निदेशक थे। छुट्टियों के कुछ दिन बिताने वे गोरखपुर आई थीं। दिल्ली से सस्ता साहित्य मण्डल के श्री यशपाल जैन ने उन्हें मेरा परिचय दिया था। साहित्य चर्चा होने लगी, उनकी कुछ कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी थीं, किन्तु उनका कोई उपन्यास प्रकाशित नहीं हुआ था। किसी प्रकाशक को उन्होंने उपन्यास की पाण्डुलिपि भेजी किन्तु उसने अस्वीकार कर दिया। दूसरे दिन वे उपन्यास की पाण्डुलिपि लाईं, उसे देखा, मुझे उपन्यास अत्यन्त रोचक लगा। कुमाऊँ के सजीव सुन्दर पात्र, लगता था ये पात्र अभी सामने उपस्थित हो जायेंगे। उसे टाइप कराया और भाई धर्मवीर भारती को 'धर्मयुग' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने को भेज दिया। 'चौदह फेरे' कई सप्ताह तक 'धर्मयुग' में छपता रहा।

'धर्मयुग' के पाठक-पाठिकाओं के ढेरों पत्र लगभग ७५० शिवानीजी को मिले। इसी बीच 'चौदह फेरे' पुस्तकाकार छपने लगी थी। शिवानीजी ने भूमिका में इन पत्रों का उल्लेख भी किया। उनका कहानी संग्रह 'लाल हवेली' भी प्रकाशित किया।

शिवानीजी का जन्म 17 अक्टूबर 1924 ई० को राजकोट में हुआ। पिता राजपुत्रों के हाउस मास्टर थे। राजकुमार कालेज में राजकुमारों के गार्जियन ट्यूटर थे।

शिवानीजी की शिक्षा शान्ति निकेतन में हुई थी। वे पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी की अत्यन्त प्रिय शिष्या थीं। हजारी प्रसादजी ने 'लाल हवेली' की भूमिका में लिखा—''एक दिन कुछ कहानियों की कटिंग और पत्र मिला। पत्र शिवानी का ही था। मैं आनन्द और हर्ष से अभिभूत हो उठा। शिवानी और कोई नहीं, गौरा है। गौरा, शान्ति निकेतन की छोटी-सी मुन्नी, मेरी परमप्रिय बहन और छात्रा गौरा ही शिवानी के नाम से ऐसी कहानी लिखने लगी है। बचपन से ही वह बड़ी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। 'धर्मयुग' में एक कहानी प्रकाशित हुई थी—'लाल हवेली'। उसकी करुण व्यथा, संयोग और भाग्य तत्त्व की सीमाओं के बावजूद, हृदय को अभिभूत कर डालती है।''

श्री शुकदेव पंत उच्च शिक्षा सचिव हो गये थे। शिवानीजी से कितनी बार लखनऊ में मिलना हुआ। जब भी जाता बड़ी आत्मीयतापूर्वक स्वागत करतीं। पंतजी अत्यन्त अस्वस्थ थे। उनसे मिलने ६६ गुलिस्तां कालोनी गया। पंतजी को जलोदर हो गया था। शिवानीजी ने बताया ''एक वैद्यजी आये थे उन्होंने पुनर्नवा पीस कर लगाने को कहा है। मैं तो अपने गुरू पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'पुनर्नवा' को ही जानती हूँ।''

पंतजी स्वस्थ न हो सके, उनका निधन हो गया। शिवानीजी के निवास पहुँचा। धवल साड़ी में शिवानीजी शोक संतप्त मिलीं। उन्होंने कहा—मृत्यु के एक दिन पूर्व एक चूड़ीवाला आवाज देता जा रहा था। पंतजी ने उसे बुलवाया, मुझे उसे लेकर चूड़ियाँ पहनाई और माथे पर सिंदूर लगाया।

शिवानीजी आज नहीं रहीं विश्वास नहीं होता। आज भी वे अपनी कृतियों—कालिंदी, कृष्णकली, चौदह फेरे, स्वयं सिद्धा उपन्यासों और लाल हवेली, चिर स्वयंवरा, यात्रिक, सोने दे, मणिमाला की हँसी आदि कहानी संग्रहों में जीवित हैं। वह स्त्री थीं, इसीलिए नारी सौन्दर्य के पीछे दु:खों और शोषण के हाहाकार को अपनी रचनाओं में अंकित किया। वे अत्यन्त लोकप्रिय कथाकार थीं किन्तु साहित्यकारों की ईर्ष्या की पात्र। उन्हें साहित्यिक मान्यता नहीं दी गई। आज भी उनके पाठकों विशेषकर युवा पाठकों की बहुत बड़ी संख्या है।

शिवानीजी सचमुच शिवानी थीं। अपनी प्रत्येक कृति में वे उपस्थित हैं। विनम्र श्रद्धांजलि।

पुरुषोत्तमदास मोदी

श्री सुधाकर पांडेय

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमंत्री **श्री सुधाकर पाण्डेय** का 18 अप्रैल 2003 को प्रात: दिल्ली में निधन हो गया। चार दशक से सुधाकरजी सभा के प्रधानमंत्री थे। अपने कार्यकाल में सुधाकरजी ने सभा का अभूतपूर्व विकास किया और सभा को स्वावलम्बी बनाया। सुधाकरजी 1971 से 1977 तक लोकसभा और 1982 से 1986 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। उन्होंने दिल्ली में भी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। उनके निधन से नागरी प्रचारिणी सभा की अपूरणीय क्षति हुई। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

मराठी लेखक वसंत पोतदार का निधन

मराठी लेखक और रंगमंच कलाकार **वसंत गोविंद पोतदार** का हृदयगति रुक जाने के कारण बुधवार, 30 अप्रैल 2003 को नासिक में निधन हो गया। वे 65 साल के थे। पोतदार ने अनेक किताबें लिखी थी जिनमें स्वामी विवेकानंद के जीवन पर योद्धा संन्यासी, पीएल देशपांडे पर पुरुषोत्तमाची गाथा और गाडगे महाराज की जीवन पर तोची साधु ओलाखावा प्रमुख हैं।

डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा

जयशङ्कर प्रसाद के अंतरंग अंतेवासी प्रमुख होमियोपैथ चिकित्सक भारती होम्यो हाल के संस्थापक **डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा** का 93 वर्ष की अवस्था में गुरुवार 12 जून 2003 को प्रात: 10.30 पर निधन हो गया। प्रसादजी के वे पड़ोसी थे और उनका सान्निध्य उन्हें प्राप्त था। प्रसादजी के वे संस्मरण निधि थे। उनके निधन से प्रसाद युग की महत्त्वपूर्ण कड़ी लुप्त हो गई। शर्माजी के प्रति हार्दिक संवेदना और श्रद्धांजलि।

नामवरजी की पत्नी का निधन

प्रख्यात समालोचक डॉ० नामवर सिंह की धर्मपत्नी **श्रीमती शान्ति सिंह** का 4 जून को दिल्ली में निधन हो गया। वे 72 वर्ष की थीं। श्रीमती सिंह पिछले कुछ समय से बीमार थीं। उनका अन्तिम संस्कार नेहरू पैलेस स्थित श्मशानघाट पर किया गया। मुखाग्नि उनके पुत्र विजय सिंह ने दी। वाराणसी में गंगा में उनकी अस्थियाँ विसर्जित की गई और शोक सभा का आयोजन हुआ।

क्षमा याचना

'भारतीय वाङ्मय' का प्रकाशन जनवरी 2003 के बाद नहीं हो सका। जनवरी का अंक प्रकाशित हुआ किन्तु रजिस्ट्रार समाचार पत्र, भारत सरकार की तकनीकी आपत्ति के कारण पंजीकरण का नवीनीकरण नहीं हो सका, अत: जनवरी अंक भी पोस्ट नहीं हो सका। अब जुलाई से 'भारतीय वाङ्मय' नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है। जनवरी 2003 अंक भी इसके साथ पाठकों को मिलेगा। इस व्यवधान की विवशता के लिए हमें खेद है, कृपापूर्वक पाठक क्षमा करेंगे। इस अंक में विगत पाँच मास के प्रमुख साहित्यिक समाचार देने का प्रयास किया गया है।

पुरस्कार-सम्मान

हिन्दी संस्थान के पुरस्कार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने वर्ष 2001 के पुरस्कार प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के सान्निध्य में प्रदान किये—

भारतभारती सम्मान (2,51,000 रु०)
आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी

महात्मा गाँधी हिन्दी गौरव (प्रत्येक दो लाख)
प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

पं० दीनदयाल उपाध्याय : कृष्णवल्लभ द्विवेदी

अवंतीबाई : मृदुला सिनहा, आशारानी वहोरा

लोहिया सम्मान : दयाप्रकाश सिनहा

साहित्यभूषण पुरस्कार (प्रत्येक पचास हजार)
थम्मन सिंह 'सरस', डॉ० ताराचंद पाल 'बेकल', रामप्रकाश, गोयल, श्रीकृष्ण तिवारी, डॉ० रामप्रसाद मिश्र, डॉ० नन्दलाल कल्ला, डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक, योगेश दयालु, गोपाल चतुर्वेदी, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', अवधनारायण मुदगल और कमलकुमार।

विद्याभूषण : डॉ० विश्वनाथप्रसाद, लोक-भूषण : डॉ० अर्जुनदास केशरी, कलाभषूण : नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, पत्रकारिताभूषण : महीप सिंह, विज्ञानभूषण : डॉ० ओमप्रकाश, प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण : अभिमन्यु अनत (सभी पुरस्कार पचास हजार के)

हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान : उषाराजे सक्सेना, डॉ० भूदेव शर्मा, बाल साहित्य भारती सम्मान : डॉ० अरुणेन्द्रचन्द्र त्रिपाठी (प्रत्येक को पच्चीस हजार)

सौहार्द सम्मान (प्रत्येक को 15 हजार)
डॉ० सूपेनेनि शेषारत्नम (तेलुगु), मुमताज इस्माइल (कन्नड़), जीत सिंह 'जीत' (पंजाबी), डॉ० निर्मला आसनाणी (सिन्धी), सुधांशु चतुर्वेदी (मलयालम), आचार्य राधागोविन्द थोड़ाम (मणिपुरी) तथा डॉ० शीमा रिजवी को (उर्दू) दिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त 17 पुस्तकों को 20-20 हजार तथा 27 पुस्तकों 8-8 हजार के नामित पुरस्कार दिये गये।

संस्कृत संस्थान के पुरस्कार

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ने वर्ष 2001 के पुरस्कार प्रदान किए—

विश्वभारती सम्मान (एक लाख इक्यावन हजार)

प्रमुख प्राच्यविद तथा संस्कृत विद्वान **प्रो० गोविन्दचन्द्र पाण्डे** को दिया गया। डॉ० पाण्डे गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष थे, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति थे, शिमला उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष हैं। गोरखपुर विश्वविद्यालय ने आपको डी०लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। इसके पूर्व लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने भी अलंकृत किया है। हाल में आपको भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। गतवर्ष तक यह संस्कृत संस्थान का सर्वोच्च पुरस्कार था।

वाल्मीकि सम्मान (दो लाख)

यह पुरस्कार इस वर्ष शुरु किया गया है। इसकी राशि विश्वभारती पुरस्कार से 49 हजार अधिक है। यह सम्मान इलाहाबाद विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष तथा पूर्व कुलपति **प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र** को दिया गया।

अन्य पुरस्कार

विशिष्ट पुरस्कार (इक्यावन हजार)

पं० कमलाकांत शुक्ल (देवरिया), पं० श्रीनाथ घनपाठी (वाराणसी), प्रो० सुरेशचन्द्र पाण्डे (इलाहाबाद), प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी (वाराणसी), पं० विद्यासागर पाण्डेय (मीरजापुर)।

वेद पण्डित पुरस्कार (पच्चीस हजार)

पं० रमेशवर्धन (गौतमबुद्ध नगर), विजयकुमार शर्मा, पं० बालेन्दु मिश्र, अनिलकुमार घोड़ेकर, अरुणकुमार पाण्डेय, देवेन्द्रकुमार राजौरिया, अशोककुमार चौबे (सभी वाराणसी), पं० लक्ष्मीकान्त चतुर्वेदी (मथुरा), रश्मिरूप मिश्र (बुलन्दशहर) और रामेशचन्द्रदास शर्मा (दिल्ली)

नामित पुरस्कार (पच्चीस हजार)

कालिदास सम्मान डॉ० रामतिलक पाण्डेय (नई दिल्ली), **वाणभट्ट पुरस्कार** डॉ० उपेन्द्र पाण्डेय (वाराणसी), **शंकर पुरस्कार** डॉ० हरेराम त्रिपाठी (कुशीनगर), **पाणिनी-सायण पुरस्कार** डॉ० चिरञ्जीव शर्मा (इलाहाबाद) और **व्यास पुरस्कार** डॉ० रूपकिशोर शास्त्री (हरिद्वार)।

विशेष पुरस्कार (ग्यारह हजार)

डॉ० जगन्नाथ पाठक (इलाहाबाद), डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली), डॉ० जनार्दन पाण्डेय, डॉ० गिरिजाशंकर शास्त्री (इलाहाबाद), डॉ० मिताली देव (वाराणसी) और डॉ० लोसंइगदाजे (सारनाथ)।

विविध पुरस्कार (पाँच हजार)

रामरंजन मालवीय, डॉ० दद्न उपाध्याय, डॉ० श्रीकिशोर मिश्र, डॉ० शैलजा पाण्डेय, डॉ० देवीप्रसाद त्रिपाठी, डॉ० रामचन्द्र पाठक, आचार्य अरुणकुमार शर्मा, डॉ० मधुसूदन त्रिपाठी, डॉ० कौशलकुमार पाण्डेय, डॉ० विजयकुमार पाण्डेय, इलद्वेन नमडोल, डॉ० रामकिशोर मिश्र, डॉ० उर्मिला श्रीवास्तव, डॉ० रामजी मिश्र, डॉ० मनुदेव भट्टाचार्य, डॉ० परमानन्द शास्त्री, डॉ० देवी सहाय पाण्डेय, डॉ० ओमप्रकाश पाण्डेय (लखनऊ), डॉ० दशरथ द्विवेदी और डॉ० रामशंकर अवस्थी।

उड़ीसा साहित्य भारती पुरस्कार

उड़ीसा के जाने-माने साहित्यकार **श्री ब्रजनाथ रथ** को गंगाधर रथ फाउंडेशन के उड़ीसा साहित्य भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

हरियाणा साहित्य अकादमी पुरस्कार

सूर पुरस्कार (पचास हजार, प्रशस्ति पत्र, सम्मान पट्टिका)
स्वदेश दीपक (कहानी तथा नाटककार)
डॉ० बैजनाथ सिंह (समीक्षक)।

कला-संस्कृति पुरस्कार
डॉ० जयनारायण कौशिक

बाबू बालमुकुन्द गुप्त पुरस्कार
(पन्द्रह हजार)
डॉ० लीलाधर वियोगी, डॉ० हेमराज निर्मल

महर्षि वेद व्यास पुरस्कार (पन्द्रह हजार)
डॉ० ओमप्रकाश भारद्वाज
श्री लक्ष्मण सिंह अग्रवाल

शमशेर सम्मान

वर्ष 2002 का शमशेर सम्मान कवि **राजेन्द्र शर्मा** और साहित्यकार **ज्ञानरंजन** को दिया गया। सम्मानस्वरूप 5001 रुपये की सम्मान निधि, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिन्ह प्रदान किया गया। इस सम्मान की स्थापना कवि शमशेर बहादुर की याद में खंडवा, सागर, भोपाल तथा इंदौर के साहित्यकारों-पाठकों ने किया है।

सरस्वती सम्मान

के०के० बिड़ला फाउंडेशन के वर्ष 2002 के सरस्वती सम्मान (5 लाख) के लिए मराठी साहित्यकार **महेश एलकुंचवार** का चयन किया गया है। यह सम्मान उन्हें उनके नाट्यमयी 'युगान्त' के लिए दिया जायगा।

व्यास सम्मान

प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० कैलाश वाजपेयी** को उनके प्रबन्धकाव्य 'पृथ्वी का कृष्णपक्ष' के लिए के०के० बिड़ला फाउंडेशन का वर्ष 2002 का व्यास सम्मान दिया जायगा। सम्मान राशि ढाई लाख रुपये है। डॉ० वाजपेयी का काव्य साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के साथ नाटक, निबन्ध और आख्यायिकाएँ जैसी अनेक विधाओं में भी इनका लेखन महत्त्वपूर्ण है।

वाचस्पति पुरस्कार

वर्ष 2002 के लिए के०के० बिड़ला फाउंडेशन की ओर से दिया जाने वाला ग्यारहवाँ वाचस्पति पुरस्कार **पं० मोहनलाल शर्मा** को दिया जाएगा। इसकी पुरस्कार राशि एक लाख रुपये की है। **बिहारी पुरस्कार** के लिए विजयदान देथा को चुना गया है। इसकी पुरस्कार राशि भी एक लाख रुपये है। **शंकर पुरस्कार** प्रो० विश्वम्भर पाहि को दिया जाएगा। इस पुरस्कार की राशि डेढ़ लाख रुपये है। वाचस्पति पुरस्कार श्री पाण्डेय को उनके उपन्यास 'पदिमनी' के लिए दिया जाएगा।

देवीशंकर अवस्थी स्मृति पुरस्कार

हिन्दी के चर्चित आलोचक **डॉ० अजय तिवारी** को सातवाँ देवीशंकर अवस्थी स्मृति पुरस्कार दिया

जायगा। 6 मई 1955 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर में जन्मे डॉ० तिवारी को उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'साहित्य का वर्तमान' पर दिया गया।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' मरणोपरांत सम्मानित

मध्यप्रदेश सरकार ने **सुमनजी** को मरणोपरांत सम्मानित किया है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने सुमनजी के पुत्र अरुणप्रताप सिंह को सुमनजी के सम्मान में स्मृति-पट्टिका प्रदान की।

मुख्यमंत्री ने बताया कि उनकी सरकार सुमनजी को उनके जीवनकाल में सम्मानित करना चाहती थी किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

मूर्तिदेवी पुरस्कार

भारतीय ज्ञानपीठ का वर्ष 2000 का मूर्ति देवी पुरस्कार **डॉ० गोविन्दचन्द्र पांडे** को उनकी कृति 'साहित्य सौंदर्य और संस्कृति' पर और 2001 का मूर्ति देवी पुरस्कार **डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी** को उनकी पुस्तक 'गुरुमहिमा' पर दिया गया। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र तथा शाल भेंट किया गया।

❑ ❑ ❑

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने **डॉ० रामजी मिश्र** को उनकी कृति 'धर्म और राजनीति' को पुरस्कृत किया है। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ने भी उनकी पुस्तक 'शंकराचार्य और उनकी परम्परा' पर पुरस्कार प्रदान किया है।

❑ ❑ ❑

लोकसाहित्य के प्रमुख रचनाकार **डॉ० अर्जुनदास केसरी** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने लोकभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। डॉ० केसरी ने लोक साहित्य तथा लोक कला पर अब तक 28 कृतियाँ प्रकाशित की हैं।

❑ ❑ ❑

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान **श्री भूदेव शर्मा** को प्रदान किया। इस अवसर पर श्री शर्मा ने बीस हजार अमेरिकी डालर की 'हिन्दी निधि' हिन्दी के विकास के लिए स्थापित करने की घोषणा की।

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार प्रदान किये गये—'गल्प समुच्चय' श्रीकृष्णकुमार राय, वाराणसी 5000 रुपये 'कुछ और तरह से भी' गजल संग्रह श्री हस्तीमल हस्ती, मुम्बई 2500 रुपये, 'कपास के फूल', 'सभ्यता की तितली' निबन्ध संग्रह श्री गोविन्दकुमार गुंजन, खण्डवा, दो हजार रुपये।

अन्य श्रेष्ठ कृतियों 'सम्बोधन की तलाश' (काव्य संग्रह) के लिए अमेरिका की डॉ० अपराजिता, 'मछलियाँ देखती हैं सपने' (काव्य संग्रह) के लिए गोरखपुर की डॉ० रंजना जायसवाल; उपन्यास 'कच्ची माटी पकती धूप' के लिए रुद्रपुर के उपन्यासकार डॉ० अनंग प्रद्युम्न कुमार; समीक्षा कृति 'छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ' के लिए महासमुंद की डॉ० अनसूया अग्रवाल; व्यंग्य संग्रह 'चाहिए एक भगतसिंह'; 'दुशाले में जूते' एवं 'अधबीच में लटके' के लिए क्रमशः देहरादून की डॉ० आशा रावत; इन्दौर के श्री चन्द्रशेखर दुबे और दमोह के डॉ० रमेशचन्द्र खरे तथा बाल साहित्य के लिए भोपाल की श्रीमती सरल जैन को प्रतिष्ठापूर्ण दिव्य रजत अलंकरणों से सम्मानित किया गया।

पहला के०पी० सक्सेना एवार्ड

प्रथम के०पी० सक्सेना पुरस्कार विख्यात रचनाकार **डॉ० अशोक चक्रधर** को दिया गया। बहुआयामी रचना व्यक्तित्व के धनी चक्रार पिछले चार दशकों से रचना कर्म में संलग्न हैं।

डॉ० कुमार विमल को राजेन्द्र शिखर सम्मान

बिहार सरकार के राजभाषा विभाग ने वर्ष 2002-03 के हिन्दी-उर्दू के 18 शीर्ष पुरस्कारों की घोषणा कर दी। हिन्दी के लिए डॉ० राजेन्द्रप्रसाद शिखर सम्मान **डॉ० कुमार विमल** तथा उर्दू का शिखर सम्मान मौलाना मजहरूल हक शिखर सम्मान **मजहर इमाम** को प्रदान किया। इसके तहत इन्हें 1.51 लाख रुपये व प्रशस्ति पत्र प्रदान किये।

साहित्यश्री सम्मान-2002

डॉ० राकेशगुप्त द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती तारावली गुप्त की स्मृति में स्थापित द्वितीय 'साहित्यश्री सम्मान' प्रसिद्ध व्यंग्यकार-कवि-समीक्षक **डॉ० गोपाल बाबू शर्मा** को प्रदान किया गया।

'साहित्यश्री सम्मान' की पुरस्कार राशि शाल और प्रतीक-चिह्न के साथ इक्यावन सौ रुपये है। समारोह का आयोजन 'ग्रन्थायन' के तत्त्वावधान में किया गया।

कथा सम्मान

2003 का अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान हिमाचल के लेखक **एस०आर० हरनोत** को उनके कहानी संग्रह 'दारोश' के लिए प्रदान किया जायगा। पुरस्कारस्वरूप लन्दन आने-जाने और एक सप्ताह रहने का व्यय दिया जायगा। 2003 का पदमानंद साहित्य सम्मान **भारतेन्दु विमल** को उनके उपन्यास 'सोन मछली' पर दिया जायगा।

राजस्थान साहित्य अकादमी के पुरस्कार

वर्ष 2002-03 के पुरस्कारों के अन्तर्गत सर्वोच्च मीरा पुरस्कार (25,000 रुपये) **हरीराम मीना** को उनकी कृति 'हाँ चाँद मेरा है', पर दिया जायगा।

अन्य पुरस्कारों के अन्तर्गत सुधीन्द्र पुरस्कार **महेन्द्र रंगा** को 'विरह का व्योग' पर, रांगेय राघव पुरस्कार **भवानी सिंह** को उनके उपन्यास 'एक गाय की मौत' पर, कन्हैयालाल सहल पुरस्कार **राकेश शर्मा** को उनके व्यंग्य 'सच ढूँढ़ते रह जाओगे' पर दिया गया। प्रत्येक को ग्यारह हजार रुपये प्रदान किये गये।

विश्व भोजपुरी सम्मान

सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो० राजेन्द्र मिश्र** को विश्व भोजपुरी सम्मान से विभूषित किया गया है, यह सम्मान उन्हें बंगाल के राज्यपाल वीरेन्द्र जे शाह ने कोलकाता में आयोजित तीसरे विश्व भोजपुरी सम्मेलन में प्रदान किया। सम्मान स्वरूप उन्हें स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया। साथ ही प्रो० मिश्र को विश्व भोजपुरी सम्मेलन की अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रीय समिति में आगमी चार वर्षों के लिए नामित किया गया है। चौथा विश्व भोजपुरी सम्मेलन 2007 में नेपाल में आयोजित किया जाएगा।

हिन्दी लोकप्रियता पुरस्कार

प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने 2000-01 और 2001-02 के लिए शिक्षा पुरस्कार और गैर हिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी लेखकों को पुरस्कार प्रदान किए। गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी लेखक वर्ग के वर्ष 2000-01 के लिए डॉक्टर वी० वेंकटेश, के शिव सत्यनारायण, डॉ० केसी अजयकुमार, डॉ० काशीनाथ अंबालगे, टी इंदिरा कृष्णमूर्ति, डॉ० कृतिवास नायक सुष्मिता मिश्रा, डॉ० नवनीत रामलाल ठक्कर, डॉ० रानू मुखर्जी, डॉ० उषा व्यास, डॉ० स्मिता दाते, डॉ० अर्जुन चौहान, स्व० एम वाई कुरैशी, जयंत रेलवानी डॉ० सिजगुरुमयुम, बृजेश्वर शर्मा, डॉ० चमनलाल, डॉ० जागीर सिंह और डॉ० फूलचंद मानव को पुरस्कार दिया गया।

डॉ० मंगलप्रसाद पुरस्कृत

कानपुर की संस्था 'मानस संगम' ने अपने 34वें वार्षिक समारोह में **डॉ० मंगलाप्रसाद** की काव्यकृति 'सीतायन' को श्रीमती रामकुमारी विशिष्ट साहित्य सम्मान से पुरस्कृत किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री यू०एस० त्रिपाठी ने डॉ० मंगलाप्रसाद को पुरस्कार राशि के ग्यारह सौ रुपये, ताम्रपत्र, शाल और श्रीफल अर्पित करके सम्मानित किया।

लोकार्पण

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन की इकाई छतरपुर एवं सरस्वती पुस्तकालय समिति छतरपुर के संयुक्त तत्वावधान में नगर के वयोवृद्ध साहित्यकार विंध्यकोकिल श्री भैयालाल ब्यास को उनके प्रबन्ध काव्य 'सीता सत्यम' पर स्व० चन्द्रप्रकाश वर्मा पुरष्कार तथा सुप्रसिद्ध चिकित्सक व साहित्यकार डॉ० सुरेन्द्र सिंह चौहान (नौगाव) को 'भारत भाषा भूषण' उपाधि से समलंकृत किया गया। श्री भैयालाल ब्यास को पुरस्कार राशि के रूप में 2,500 रुपये की राशि, स्मृति चिन्ह, सम्मान पत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान कर तथा डॉ० सुरेन्द्र सिंह चौहान को उपाधि पत्र के साथ सम्मान पत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सम्मानित साहित्यकार डॉ० सुरेन्द्र सिंह चौहान की पुस्तक 'आध्यात्मिक वादियाँ' एवं डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैया' की काव्यकृति 'कभी कभी यह भी' का विमोचन मंचस्थ विद्वानों द्वारा किया गया।

कथन

प्रवासी भारतीय शिक्षाविद लार्ड भीखू पारिख

भारतीय शिक्षण संस्थान का स्तर काफी गिर गया है। सिर्फ दो संस्थान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान ही ऐसे रह गये हैं जहाँ अब भी गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई होती है। स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ शोध में भी गिरावट आ रही है। विभिन्न क्षेत्रों के अग्रणी भारतीय मूल के प्रोफेसर भारतीय शिक्षण संस्थाओं में अतिथि शिक्षक के रूप में पढ़ा सकते हैं, इसके लिए एक समग्र योजना की जरूरत है।

सुश्री चोरांदा बायोनोवा (हिन्दी ग्रन्थों की बलगारिया भाषा में अनुवादिका)

भारत में शुद्ध हिन्दी सुनने को नहीं मिलती। यहाँ की भाषा खिचड़ी हो चुकी है। अच्छी हिन्दी के जानकार भी बातचीत के दौरान अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है और आध्यात्मिक तौर पर पूरी दुनिया को नैतिकता की नयी राह दिखा सकता है लेकिन यहाँ के लोग ही यहाँ की संस्कृति को लेकर उदासीन हैं।

बल्गारिया में हिन्दी काफी फल फूल रही है, छात्रों का आकर्षण विदेशी भाषाओं में हिन्दी की ओर सबसे ज्यादा है।

प्रो. जॉन जुसेप्पेफिलिप
(इतालवी इतिहासविद्)

भारतीय सभ्यता ही पूरे विश्व की एकमात्र ऐसी सभ्यता है जिसमें कभी बिखराव नहीं आया। विश्व का प्राचीनतम देश भारत अनोखा है।

(प्रो० फिलिप ने सेटेलाइट द्वारा पहली बार जानकारी होने पर कि महाभारतकालीन राजा द्रुपद की नगरी काम्पिल्य की उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में खोज की।)

❑ ❑ ❑

शिक्षा की गुणवत्ता सार्थक होनी चाहिए। बाहरी परिस्थितियों के दबाव के कारण उच्च शिक्षा निरन्तर महंगी होती जा रही है जो चिंतनीय और विचारणीय है।

सामाजिक बदलाव के साथ शिक्षा में परिवर्तन जरूरी है लेकिन इसका स्वरूप सभी को समान शिक्षा मुहैया कराना होना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता दिशा और सार्थकता निर्धारित होनी चाहिए। सामाजिक व शैक्षिक मुद्दे पर राजनीतिक दलों में सहमति जरूरी है। दिल्ली के विश्वविद्यालयों के कुछ शिक्षक जमीन और शेयर बेचने का कार्य करते हैं जो अकादमिक समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है।

— त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी
राज्यपाल, कर्नाटक

❑ ❑ ❑

संचार क्रान्ति के कारण आज साहित्य का दायरा सिमटता जा रहा है। साहित्य समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन का हथियार नहीं रह गया। साहित्यकारों को यह भ्रम पालने का सपना देखना छोड़ना चाहिए। यह समाज में परिवर्तन नहीं ला सकता, लेकिन मनुष्यत्व को बचाने में सफल है।

वर्तमान युग आस्था का नहीं बल्कि संशय का युग है। हकीकत तो यह है कि अब अनास्था में भी आस्था नहीं रह गई है। कम्प्यूटर तथा अन्य संचार माध्यमों के कारण साहित्य सिमटता जा रहा है। इनके आगे अब कोई साहित्य क्यों पढ़ेगा यह विचारणीय प्रश्न है। इसमें कोई शक नहीं कि संचार माध्यम साहित्य के विकास के मार्ग में बाधक हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि वे साहित्य का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे।

आज के साम्प्रदायिक तथा आतंकवाद के जमाने में साहित्य ही तो आत्मविचार रखने का एकमात्र साधन है। कविता तथा उपन्यास दोनों को एक ही तराजू में नहीं तौला जाना चाहिए। कविता की तरह उपन्यासों में समानता नहीं होती। हर उपन्यास का अपना अलग मानक होता है। **— डॉ० बच्चन सिंह**

❑ ❑ ❑

संसार में धर्मात्माओं, आदर्शवादियों और नि:स्वार्थ सेवियों का होना भी उतना ही सत्य है, जितना कि लोभ और भय से ग्रसित स्वार्थी और पापी मनुष्यों का होना। अत: आदर्श चरित्र न तो अविश्वसनीय हैं और न अस्वाभाविक। उनका चित्रण अयथार्थ नहीं है। वस्तुत: यथार्थवाद और यथार्थ चित्रण दोनों में पर्याप्त भेद है। यथार्थवाद का जोर जीवन के केवल हीन और कुरूप पक्ष के चित्रण पर रहता है जबकि यथार्थ चित्रण में मानव जीवन के सुन्दर और असुन्दर दोनों पक्षों को उनके वास्तविक रूप में प्रदर्शित किया जाता है। पौराणिक आख्यानों पर आधारित अपने उपन्यासों में मैंने चरित्रों और घटनाओं के यथार्थ चित्रण का प्रयास किया है।

— नरेन्द्र कोहली
अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, भरतपुर में

❑ ❑ ❑

अपन देस के प्यार में, पूजीला दिल से डाड़ी
सोचके मन से भरीला, सरनामी संस्किरती गाड़ी

■ ■ ■

भाग बड़ा तेज हमार, हम पक्का सरनामी
इही देस में हमार प्रेम नगर है, इही के करबे अवादी

— जीत नाराइन
सूरीनाम

अंतरंग संस्मरणों में जयशङ्कर 'प्रसाद'

सुप्रसिद्ध कहानी लेखिका **डॉ० सूर्यबाला के विचार**

बहुत दिनों बाद एक ऐसी पुस्तक हाथ लगी जिसे, जहाँ से भी खोला, आगे-पीछे पढ़ती चली गई। तन्मयता और करुणा संवलित आनन्द की तृप्ति का यह अहसास एक विरल अनुभूति थी। सबसे बढ़ कर पढ़ते हुए कुछ ऐसा भाव कि यह पुस्तक कभी खत्म नहीं, लम्बी होती जाये....

यह पुस्तक शायद इस समय की बहुत बड़ी जरूरत भी थी। आज जब चारों तरफ विवादों, विमर्शों के नाम पर सुर्खियों में बने रहने की और नितांत सतही आरोपों-प्रत्यारोपों की होड़ सी मची है लेखन जगत में, तब जैसे प्रसाद के व्यक्तित्व से जुड़े ये संस्मरण-संदर्भ और ज्यादा बहुत प्रासंगिक हो उठे हैं। रचनाकारों के लिये ही नहीं, व्यक्तिमात्र के लिए एक लेखक के लिये उसके व्यक्तित्व के सामाजिक पक्ष की साज-संभाल भी जरूरी है। लेखक होने मात्र से उसका कोई भी कृत्य क्षम्य नहीं हो सकता। पढ़ने वालों के मन में उसके लेखन के साथ-साथ जीवन-पक्ष के प्रति भी सम्मान-प्रतिष्ठा का भाव बना रहना चाहिये।

हिन्दी पाठकों का एक बड़ा वर्ग 'प्रसाद' जैसे, शताब्दी के महान रचनाकार के इस अंतरंग से, इस ऊर्ध्वमुखी उज्जवलतम पक्ष से अनजान था, अत: इन संस्मरणों को जुटाने में आपने जो भी प्रयास, श्रम किया है वह सचमुच स्तुत्य है, अभिवंदनीय है।

विद्वता, प्रतिभा और रचनात्मकता के चरम पर पहुँचा हुआ व्याक्ति इतना निस्पृह, निर्विकारी हो सकता है, सहसा विश्वास नहीं होता। आगे के रचनाकारों के बीच प्रसाद शायद किंवदंती सदृश ही रहेंगे। जिस तरह महात्मा गाँधी के लिये आइंसटीन ने कहा था, उसी तरह, रचनाकारों की भावी पीढ़ी के लिए यह विश्वास कर पाना मुश्किल होगा कि प्रसाद जैसे महान रचनाकार सचमुच इस शताब्दी में हुए थे।

मोदीजी! मेरे मन में एक विचार आया है, प्रसादजी के इन संस्मरणों और कृतियों के पात्रों पर एक लम्बी गद्य-काव्य नाटिका भी क्यों न प्रस्तुत की जाये।... काशी की ही कोई प्रतिभा इसमें रुचि ले तो शायद पूरा न्याय हो सकेगा क्योंकि उसके लिये बनारसी संस्कृति में भी रचा-बसा होना चाहिये।

भारतीय वाङ्मय

'भारतीय वाङ्मय' महत्त्वपूर्ण पत्रिका के माध्यम से न केवल अनेकानेक विद्वान, लेखकों, पाठकों के विचारों से साक्षात्कार होता है, बल्कि अनेक विषयों पर विचारोत्तेजक सामग्री भी मिलती है। साहित्य जगत की गतिविधियों एवं नवीनतम पुस्तकों की समीक्षाओं से पुस्तकों की जानकारी भी मिलती है। 'भारतीय वाङ्मय' के नियमित प्रकाशन के लिए बधाई। **— सुशीलकुमार सिंह,** भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ

❑ ❑ ❑

'इतिहास का सच' मार्मिक एवं सत्य है। आज जबकि 'सच' कहने को ही सुविधा भोगी तैयार नहीं तब आपने सच कहने का साहस किया। **— डॉ० रमेशचन्द्र,** कानपुर

कोलंबिया विश्वविद्यालय में सूर्यबाला

प्रख्यात कथाकार सूर्यबाला को उनकी विदेश यात्रा के दौरान कोलंबिया विश्वविद्यालय के एशियाई भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन विभाग ने आमंत्रित किया जहाँ उन्होंने 'समकालीन महिला-लेखन' तथा अपनी लेखन यात्रा के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं तथा विभाग को सम्बोधित किया। संगोष्ठी के उत्तरार्ध में उन्होंने अपनी कहानी 'होगी जय पुरुषोत्तम नवीन' का पाठ भी किया तथा कुछ अन्य कहानियाँ (माय नेम इज़ ताता) के अंश पढ़ कर सुनाये।

विश्व के विभिन्न देशों से आये छात्र-छात्राओं ने भरपूर जिज्ञासा और उत्साह से उनसे, उनके लेखन, जीवन-दृष्टि तथा आतंकवाद और नारी विमर्श जैसे विश्वव्यापी मुद्दों पर बातचीत की।

संगोष्ठी में विभाग की प्राध्यापिका शाहीन, फ्रांसिस प्रिंचेंट, प्राध्यापक फिलिप्स डोलनबर्ग उपस्थित थे तथा सम्पूर्ण संयोजन एवं संचालन हिन्दी की प्रतिष्ठित कथा-लेखिका और विभाग की अध्यक्षा डॉ० सुमन बेदी ने किया।

हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा

विदेश उपमंत्री श्री दिग्विजय सिंह के अनुसार आगामी चार-पाँच महीने में हिन्दी के संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा होने की सम्भावना है। नेपाल, भूटान, त्रिनिदाद, टोबैगे, फिजी, सूरीनाम, मारीशस सहित संयुक्त राष्ट्र के लगभग 25 सदस्य हिन्दी की आधिकारिक भाषा बनने पर सहमत हैं। ब्रिटेन, नीदरलैण्ड और जर्मनी जैसे यूरोपीय देशों का समर्थन भी मिलने की आशा है। भारत को इसके लिए सौ करोड़ रुपये खर्च करने होंगे। मुख्य कठिनाई यह है कि संयुक्त राष्ट्र को प्रतिदिन का व्यय अपने कोष से करना होगा।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक राजधानी

यूनेस्को और अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ ने नई दिल्ली को विश्व पुस्तक राजधानी घोषित किया है। नेशनल बुक ट्रस्ट प्रगति मैदान में स्थायी रूप से पुस्तक मण्डप की स्थापना कर रहा है जहाँ सभी भाषाओं की नवीनतम पुस्तकें प्रदर्शित की जायँगी। नेशनल बुक ट्रस्ट का एक पुस्तक संग्रहालय स्थापित करने का विचार भी है जहाँ भारत की प्राचीन पुस्तकों का परिरक्षण और संरक्षण किया जायगा।

सद्दाम का नामोंनिशान मिटाने का प्रयास

सत्ता का स्वभाव एक सा होता है। एक सत्ता गई दूसरी आई। आने वाली सत्ता पिछली सत्ता का नामोनिशान मिटा देने का प्रयास करती है। इराक में सद्दाम हुसेन की सत्ता गई तो स्कूलों की पुस्तकों से सद्दाम हुसैन का नाम भी मिटा दिया जाय, यह अमेरिकी प्रयास हो रहा है। सद्दाम का आतंक और अमेरिका का आक्रमण क्या एक दूसरे का पर्यायवाची नहीं है। इराक के इतिहास में सद्दाम का नामोंनिशान मिटाकर क्या अमेरिका अपने को प्रतिष्ठित कर पायेगा? वर्तमान पीढ़ी क्या यह भूल सकेगी कि अमेरिका के अस्त्र-शस्त्रों ने इराक की सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर दिया। शताब्दियों में सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है, नष्ट होने में क्षण भी नहीं लगता।

थीसिस के लिए घूस

हरियाणा में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी संकाय के रीडर डॉ० रमेश गुप्ता को शोधार्थी प्रदीप गुप्ता से शोधकृति स्वीकृत करने की एवज में राज्य सतर्कता ब्यूरो ने 10,000 रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।

साहित्य अकादमी

गोपीचंद नारंग : अध्यक्ष

साहित्य अकादमी की जनरल कौंसिल ने अकादमी के उपाध्यक्ष तथा उर्दू के सुप्रसिद्ध आलोचक गोपीचंद नारंग को नया अध्यक्ष निर्वाचित किया है।

साहित्य अकादमी के पूर्व घोषित 2002 के अकादमी पुरस्कारों को श्री गोपीचंद नारंग ने बाइस भारतीय भाषाओं के लेखकों को सम्मानित किया। पुरस्कारस्वरूप प्रत्येक लेखक को 40 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र, शाल तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान किये गये। इनमें उर्दू के शायर गुलजार, हिन्दी के चर्चित कवि राजेश प्रमुख हैं।

एक शताब्दी से प्राच्य विद्या की सेवा में

मोतीलाल बनारसीदास

प्राच्य विद्या के प्रमुख तथा विशिष्ट प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास ने अपने कार्यकाल के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। पैतृक व्यवसाय ज्वेलरी को छोड़ पुस्तक व्यवसाय में आये। शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ कर्नाटक के राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने दिल्ली में किया। शताब्दी समारोह का आयोजन वर्षपर्यन्त विभिन्न शहरों में आयोजित होता रहेगा।

किसी प्रकाशक की अनेक पीढ़ियाँ निरन्तर प्रकाशन उद्योग में लगी रहें यह कम देखने को आता है। भारत के पुस्तक प्रकाशन क्षेत्र में मुश्किल से ऐसे प्रकाशन संस्थान मिलेंगे। मोतीलाल बनारसीदास के संचालकों को बधाई जिन्होंने देश-विदेश में भारतीय प्राच्य विद्या के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित कर, विदेशों में वितरित कर देश को प्रतिष्ठा प्रदान की।

राजनीति का सच

इतिहास गवाह है रोम जल रहा था, नीरो बाँसुरी बजा रहा था। आज वही स्थिति देश में दिखाई दे रही है। भूख से, ठण्ड से, गर्मी से, बाढ़ से, सूखे से, गरीबी से, आतंक से देश की अनगिनत जनता मारी जा रही है और हम जश्न के बड़े-बड़े आयोजन कर रहे हैं। जन्म समारोह मना रहे हैं। आज इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। विनाश के कगार पर हम खड़े हैं, कब लहर आयेगी, हमें ले जायगी। बस इसकी प्रतीक्षा है।

विष्णु प्रभाकर ने 91 वर्ष पूर्ण किये

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार श्री विष्णु प्रभाकर ने 21 जून को 92वें वर्ष में प्रवेश किया। विष्णुजी हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार हैं, पूरी एक शताब्दी का अनुभव है। देश और विश्व के तेजी से बदलते हुए परिवेश में अन्य रचनाओं की अपेक्षा है। गाँधीवादी युग से आरम्भ लेखनी इस युग को भी अभिव्यक्ति प्रदान करे, यही कामना है।

श्रीकान्त जोशी की द्वितीय पुण्यतिथि

24 जनवरी 2003 को खण्डवा में श्रीकान्त जोशी की पुण्य तिथि पर साहित्यिक आयोजन हुआ जिसमें श्रीकान्तजी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर विश्लेषणात्मक एवं संस्मरणात्मक विचार प्रकट किये गये। श्री भगवत रावत, श्री राजेश जोशी, श्री आशुतोष दुबे, विनीत तिवारी, श्री कैलाश मण्डलेकर आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—श्रीकान्तजी बेहद साधारण से दिखने वाले बेहद साधारण-सी दिखने वाली भाषा के कवि होते हुए भी असाधारण कविता के असाधारण व्यक्तित्व के आदमी थे।

बनारसीदास चतुर्वेदी पत्र संग्रह कक्ष

10 अप्रैल 2003 को मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक मंत्री श्री अजय सिंह ने सप्रे संग्रहालय, भोपाल में 'बनारसीदास चतुर्वेदी पत्र संग्रह कक्ष' का शुभारम्भ किया। चतुर्वेदीजी ने हजारों पत्र लिख कर दिवंगत हिन्दी सेवियों और शहीदों की कीर्ति रक्षा के लिए स्तुत्य कार्य किया।

पं० इलाचन्द्रजोशी जन्म शताब्दी समारोह

कन्नौज में नवम्बर दिसम्बर 2002 में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार पत्रकार पं० इलाचन्द्र जोशी (1902-1982) का जन्म शताब्दी वर्ष आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, साहित्य ग्रन्थों का लोकार्पण तथा विभिन्न विद्वानों को सम्मानित किया गया। अध्यक्ष डॉ० अवधेश अवस्थी ने कहा कि प्रेमचंद के बाद अधिक जटिल मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर आधुनिकता का संदर्भ जोशीजी ने दिया। 'लज्जा' हिन्दी का प्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। समारोह का संयोजन श्री सुशील राकेश, सम्पादक दश्कारंभ पत्रिका ने किया।

विदेश में हिन्दी

अरबी तथा हिन्दी का विश्व प्रतिशत बढ़ रहा है। इसका कारण इन भाषाओं की व्यावसायिक तथा व्यावहारिक उपयोगिता है। भारत में हर प्रान्त की अपनी-अपनी भाषा है किन्तु पूरे राष्ट्र की संवाद भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी न केवल संख्याबल वरन भू-विस्तार की दृष्टि से भी विश्व की प्रधान भाषाओं में से एक है तथा इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में 70 करोड़ बताई गई है तथा इसके बोलने वाले भारत के बाहर नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा, फीजी, मारीशस, सूरीनाम तथा दक्षिण अफ्रीका में ऐसे लाखों प्रवासी भारतीय हैं जो इन देशों के स्थायी नागरिक हैं

और मातृभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

सूरीनाम में विश्व हिन्दी सम्मेलन

भारतीय संस्कृति में रचे और प्रकृति की गोद में बसे कैरिबियाई देश सूरीनाम की राष्ट्र भाषा भले ही डच हो, लेकिन भारतवंशियों ने हिन्दी का झंडा बुलन्द कर रखा है। सूरीनाम जो भारतीय प्रवासियों का देश है 7 जून से 10 जून 2003 तक आयोजित सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इससे वहाँ हिन्दी की स्थिति काफी मजबूत होने की सम्भावना है।

चार लाख की आबादी वाले देश में यद्यपि भारतवंशियों की भाषा सरनामी है, जिस पर भोजपुरी और अवधी तथा डच का प्रभाव है लेकिन मानक हिन्दी का भी प्रचार-प्रसार काफी है। सूरीनाम के भारतवंशी अपनी सन्तानों को हिन्दी सिखा रहे हैं। देश में 40 प्रतिशत भारतवंशी हैं। हालैंड से चार गुना बड़े इस देश में 1960 से भारत सरकार की मदद से हिन्दी भाषा शिक्षण की व्यवस्था हुई। 1960 से अब तक स्थानीय प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा की परीक्षाओं के माध्यम से हजारों विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। यूँ तो इस देश में 16 मातृभाषाएँ हैं, लेकिन 1978 में प्रो० सदानन्द सिंह के प्रयासों से सूरीनाम हिन्दी परिषद ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है।

सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी के 25 विद्वानों को सम्मानित किया गया जिनमें भारत के प्रख्यात पत्रकार प्रभाष जोशी और कवि कुँवरनारायण तथा विदेश में हिन्दी सेवा के लिए रामदेव धुरंधर, प्रो० तोसियो तनाका तथा डॉ० लोथार लुत्से हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले दस भारतीय हिन्दी विद्वानों को सम्मानित किया गया। इनमें उपन्यासकार मृदुला गर्ग, पत्रकार वेदप्रताप वैदिक और दयाकृष्ण विजयवर्गी, धर्मपाल मैनी और शंकरलाल पुरोहित हैं। इनके साथ ही दक्षिण भारतीय हिन्दी विद्वानों डॉ० एनवी राजगोपालन, पी संजीवैया और प्रो० तंकामणि अम्मा को भी सम्मान प्रदान किया गया।

विदेशी खंड में जर्मनी के डॉ० लोथार लुत्से, जापान की प्रो० तोसियो तानका, मॉरीशस के रामदेव धुरंधर, फिजी के प्रो० सुब्रह्मण्यम और सूरीनाम के डॉ० जीतनारायण शामिल हैं। इनके अलावा इसी वर्ग में अमेरिका के डॉ० रामदास चौधरी, उजबेगिस्तान के प्रो० आजाद समातोव, फ्रांस की प्रो० एनी मोतो, दक्षिण अफ्रीका के डॉ० वी० रामविलास, तजाकिस्तान के प्रो० एच० रजावोव, पोलैंड की डॉ० दानुता स्वासीक, ब्रिटेन की अचला शर्मा, चेक गणराज्य के डॉ० स्वतीस्लाव कोस्तिक, चीन के प्रो० येन हांगयून और म्यांमार के डॉ० ऊ पार्गो को भी सम्मानित किया गया।

यूरोपीय हिन्दी समिति का गठन

यूरोप के हिन्दी साहित्यकारों ने सूरीनाम में एक बैठक में यूरोपी हिन्दी समिति का गठन किया। इंग्लैण्ड के डॉ० पद्मेश गुप्त के संयोजन में आयोजित बैठक में नीदरलैण्ड के डॉक्टर मोहनकान्त गौतम, इंग्लैण्ड के श्री अनिल शर्मा, सुश्री उषा राजे और श्री के०वी०एल० सक्सेना, हंगरी की डॉक्टर मारिया नेजएसी, पोलैण्ड की सुश्री दानुता स्ताशिक, बुल्गारिया की डॉक्टर यारदंका बायोनोवा, इटली की सुश्री मारियाला अफीदी ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉक्टर पद्मेश गुप्त ने यूरोपी हिन्दी समिति की स्थापना की पृष्ठभूमि एवं प्रस्तावित गतिविधियाँ तथा लक्ष्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यूरोप में हिन्दी को विस्तार देने के लिए यूरोप के सभी देशों के हिन्दी सेवियों को एक मंच पर लाने के लिए यह कदम उठाया गया है।

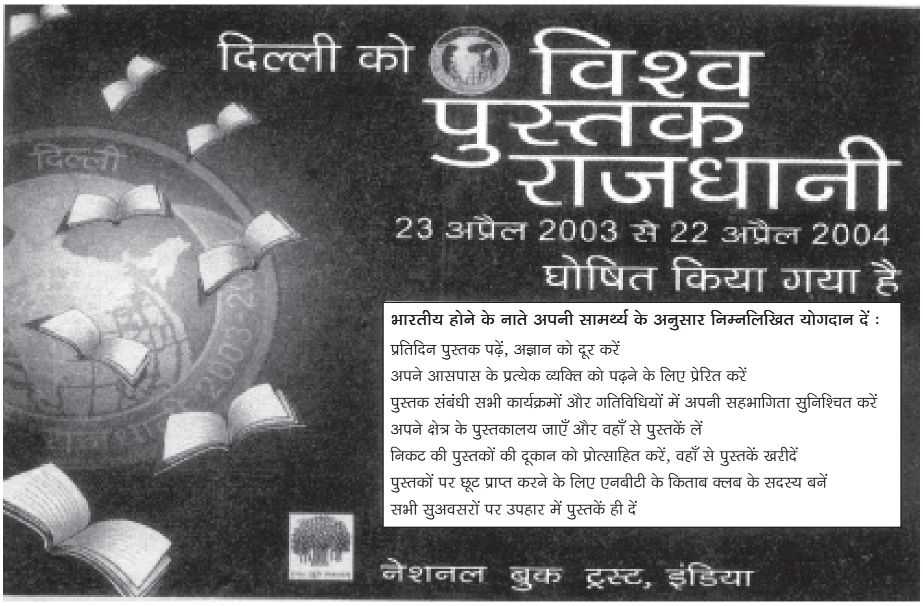

विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली

14 फरवरी से 22 फरवरी 2004

नेशनल बुक ट्रस्ट के नये अध्यक्ष

भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए चार राज्यों द्वारा सम्मानित तथा हिन्दी के विकास में योगदान के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत **ब्रजकिशोर शर्मा** ने 29 मार्च 2003 को नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष का पदभार सम्भाल लिया। श्री शर्मा कापीराईट बोर्ड के अध्यक्ष भी हैं।

केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय में पूर्व अपर सचिव श्री शर्मा को मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली और कर्नाटक सरकार भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए सम्मानित कर चुकी है। उन्होंने भारतीय संविधान पर हिन्दी और अंग्रेजी में पुस्तकें लिखी हैं तथा हिन्दी और भारतीय भाषाओं में विधि शब्दावली के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है।

डॉ० किशोरीलाल गुप्त 87 वर्ष के हुए

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् **डॉ० किशोरीलाल गुप्त** ने गंगा दशहरा को अपने जीवन के 87 वर्ष पूर्ण कर 88वें वर्ष में प्रवेश किया। गुप्तजी को जन्मदिन की बधाई। गुप्तजी बीसवीं शताब्दी के प्रमुख साहित्यकार हैं। भदोही जनपद के ग्राम सुधवै में गुप्तजी के पास संग्रहित पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है, जिससे शोधार्थी लाभ उठाते हैं।

पुस्तकें प्राप्त

डॉ० रामशिरोमणि होरिल की रचनाएँ

काजल और कनेर	30.00
ढाका विजय (काव्य)	100.00
दुष्यन्त प्रिया (काव्य)	100.00
अम्बेडकर महान	15.00

ग्रन्थायन, अलीगढ़-01

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

28.2.1953

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग स्थापित

देश में 25 विश्वविद्यालय, 700 कालेज, एक लाख विद्यार्थी, 15 हजार शिक्षक।

2003

294 विश्वविद्यालय, 11,554 कालेज,, 4 लाख 75 हजार शिक्षक

केन्द्रीय विश्वविद्यालय : सत्रह

यह भी जानिए

भारत में 4635 समुदाय हैं।
188 भाषाएँ हैं।
544 बोलियाँ हैं।

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दयानन्द जीवनगाथा

डॉ० भवानीलाल भारतीय

9''×5$\frac{3}{4}$ पृष्ठ : 180 मूल्य : 120.00

ISBN : 81-7124-305-3

डॉ० भवानीलाल भारतीय आर्यजगत् के गम्भीर चिन्तक और यशस्वी लेखक हैं। उन्होंने प्राचीन संस्कृति का गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में उन्होंने महर्षि दयानन्द के जीवन, लेखन, भाषा, शास्त्रार्थ, चिन्तन, सामाजिक और धार्मिक क्रियाकलाप का विस्तृत विवेचन किया है। यह ग्रन्थ 25 अध्यायों में विभक्त है। इसमें स्वामी दयानन्द के जीवन के सभी पक्षों को समेटने का प्रयत्न किया गया है। भारत की तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थिति के अध्ययन से स्वामी दयानन्द को समाजसुधार और समाज को नवीन चेतना देने की आवश्यकता अनुभव हुई। एतदर्थ उन्होंने समाज के पुनरुत्थान हेतु अनेक कार्य प्रारम्भ किए। उन्होंने वर्ण व्यवथा को जातिमूलक न मानकर वैदिक परम्परा के अनुसार गुण-कर्मानुसार प्रतिपादित किया। समाज में विद्यमान अन्ध-परम्पराओं को समाप्त करने के लिए प्रयत्न किया। नारी जाति के गौरव को पुन: स्थापित करने के लिए नारी शिक्षा का प्रचार किया। नारी शिक्षा के लिए कन्या गुरुकुलों की स्थापना की योजना प्रस्तुत की। विधवा-विवाह को शास्त्रीय रूप से उचित बताया। वेदों के पुनरुद्धार के लिए उन्होंने जो प्रयत्न किया, वह सर्वथा श्लाघ्य है। चारों वेदों का मूलपाठ प्रकाशित कराया। यजुर्वेद का पूरा और ऋग्वेद के आधे से अधिक भाग का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य लिखा। वेदों को आर्यजाति का प्राणस्वरूप ग्रन्थ बताते हुए उन्होंने वेदों के अध्ययन पर बहुत बल दिया। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने के लिए गुरुकुल-पद्धति को पुन: प्रवर्तित करने की प्रेरणा दी। अनाथों, निर्धनों और दीन-हीनों की शिक्षा एवं दीक्षा के लिए अनाथालय, विधवा आश्रम आदि की स्थापना प्रारम्भ की।

राष्ट्रीयता के क्षेत्र में उनका सर्वोत्तम योगदान था—स्वतन्त्रराष्ट्र की घोषणा। किसी भी स्थिति में पराधीनता या परायत्तता उन्हें स्वीकार नहीं। राष्ट्रीय चेतना के वे प्रथम उद्घोषक के रूप में सामने आए। प्राचीन शास्त्रार्थ पद्धति को उन्होंने शास्त्रीय चेतना जागृत करने के लिए प्रस्तुत किया। प्राचीन भारतीय वाङ्मय को विश्व का आदर्श साहित्य बताया। आर्थिक चिन्तन के रूप में पशु रक्षा को और विशेष रूप से गोरक्षा को देश के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बताया। प्राचीन शिक्षा-पद्धति, संयम, ब्रह्मचर्य, स्वाभिमान, राष्ट्रीय अस्मिता आदि को पुनर्जीवित करने के लिए अथक परिश्रम किया। हिन्दी भाषा के उन्नायकों में वे अग्रगण्य हैं, गुजराती होते हुए भी उन्होंने अपना प्रचार साहित्य हिन्दी में लिखा। 'सत्यार्थप्रकाश' ने हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वामी दयानन्द के अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में उल्लेखनीय है—आर्यसमाजों की स्थापना, शुद्धि आन्दोलन, स्वदेशी का प्रचार, भारतीय उद्योगों को प्रश्रय, अछूतोद्धार, मूर्तिपूजा और अवतारवाद का खण्डन, अन्य मतों की समीक्षा में कुरान और बाइबिल की भी कठोर समीक्षा, सभी सम्प्रदायों को एकत्रकर एक समन्वित आचारसंहिता बनाने का प्रयत्न करना, सभी हिन्दुओं को एकत्र करने का प्रयत्न, प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करना, भारत के प्राचीन गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न, भारतीय अस्मिता को जागृत करना।

डॉ० भारतीय ने स्वामी दयानन्द के भारत-भ्रमण का क्रमबद्ध एवं विस्तृत विवरण दिया है। विश्व के सभी समाजसुधारक महापुरुषों के तुल्य स्वामी दयानन्द को भी घोर विरोधों का सामना करना पड़ा है। इसका भी विवरण ग्रन्थ में यथास्थान दिया गया है। स्वामी दयानन्द के कृतित्व में विशेष उल्लेखनीय है—वेदों का भाष्य, सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका।

डॉ० भारतीय ने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों आदि का विस्तृत विवरण न देकर केवल उनके विषय आदि का निर्देश कर दिया है। स्वामी दयानन्द के जीवन-दर्शन का संक्षिप्त, रोचक और विवेचनात्मक स्वरूप प्रस्तुत करके डॉ० भारतीय ने प्रशंसनीय कार्य किया है। सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है। पुस्तक की साज-सज्जा, छपाई आदि उत्तम है। **— डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा
डॉ० वसुन्धरा मिश्र

9''×5$\frac{3}{4}$ पृष्ठ : 316 मूल्य : 250.00

ISBN : 81-7124-324-X

'धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद' देखकर लगा कि यह सर्वांगपूर्ण है और हिन्दी भाषा में अब तक लिखे या सम्पादित सारे ग्रन्थों की सीमा का अतिक्रमण करती है।

— आचार्य प्रभुदयाल अग्निहोत्री
भोपाल

पुस्तक के नाम में रहस्यवाद न होकर रहस्य दृष्टि होता तो विषय की उपयुक्तता अधिक संगत बैठती। रहस्यवाद तो अति माडर्न संज्ञा है, हिन्दी में छायावाद कविता की एक शाखा रहस्यवाद कल्पित की गयी है।

जिल्द में पुस्तक के परिचय में जो यह छपा है—''प्राचीन युग से लेकर अर्वाचीन युग तक रहस्यवाद की एक अविच्छिन्न धारा प्रवहमान है जिसने धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति को प्रभावित किया, जो अविवाद्य है।''

आभिरग यह कथन चौंका देनेवाला है। सम्भवत: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ही प्रथम कविता के क्षेत्र में रहस्यवाद का प्रयोग किया है। इसके पूर्व रहस्यवाद संज्ञा का प्रयोग नहीं हुआ है। रहस्यदृष्टि और रहस्यवाद में अन्तर है। रहस्यवाद संज्ञक से आन्दोलन की झलक आती है, रहस्यदृष्टि से आन्तरिक क्रियाशीलता की। **— जयशंकर त्रिपाठी**
इलाहाबाद

एक विश्व : एक संस्कृति

राष्ट्रिय पंडित व्रजवल्लभ द्विवेदी

पृष्ठ : 216 मूल्य : 150.00

ISBN : 81-7124-334-7

प्रत्यक्ष रूप से इस पुस्तक का शीर्षक भ्रामक है, क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से विश्व एक नहीं है और मानव विज्ञान की दृष्टि से संस्कृति भी एक नहीं है। परन्तु इसमें कोई संशय नहीं कि ब्रह्माण्डीय (कॉसमिक) दृष्टि से सारा जगत और इसके सारे प्राणी एक ही सूत्र में बँधे हैं। फिर भी इसका अर्थ यह नहीं होता कि मानव संस्कृति अचर और अपरिवर्ती है। 'एक' संस्कृति से विद्वान लेखक का तात्पर्य एककरणीय नहीं है। एकता में अनेकता की बात बनती है। गाँधीजी के सर्वधर्म-समभाव की अवधारणा से अनेक संस्कृति की एकता स्पष्ट होती है।

प्रबुद्ध चिन्तक धर्म और दर्शन के निष्णात पंडित आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदीजी ने अपने आठ-दसकों के मनन-चिन्तन का निचोड़ इस पुस्तक में प्रतिपादित किया है। इनकी शैली अनोखी है, विचार गम्भीर हैं। लेखक ने अपने ग्रन्थ को पाँच 'अधिकारों' में विभक्त किया है जिसे साधारणत: अध्याय, परिच्छेद अथवा प्रकरण कहा जाता है। प्रथम अधिकार में सभ्यता, संस्कृति और साहित्य की सामान्य चर्चा के पश्चात् विश्व संस्कृति के विकास के साधक एक बाधक तत्वों की चर्चा की गयी है। द्वितीय अधिकार में धर्म और संस्कृति संबद्ध नाना प्रश्न उठाये गये हैं। तृतीय अधिकार में तन्त्रागमीय दर्शन को प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अधिकार में तन्त्रागमीय वांगमय के अतिरिक्त सिद्धों और भक्तों की भी चर्चा की गयी है। पंचम अधिकार में सम्पूर्ण मानवता के प्रति समता दृष्टि के माध्यम से विकसित होने वाली विश्वाहन्ता और विश्व संस्कृति के क्रम को दर्शाते हुए विश्व दृष्टि एवं विश्व व्यवहार का विलक्षण विश्लेषण किया गया है। दो सौ पृष्ठों का यह अभिनव पुस्तक उपसंहार और विषयानुक्रमणी से सम्पूर्ण बनता है।

एक विश्व : एक संस्कृति की कल्पना साकार हो व न हो किन्तु इस पुस्तक के पाँच अधिकार के पंचतत्व की एक नयी दृष्टि बनती है। भारतीय दर्शन के अनुसार क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर से ब्रह्माण्ड बना है। परन्तु इन प्रत्येक लघु ब्रह्माण्ड के

अपने-अपने महत्व हैं, और यदि इनमें से किसी एक का भी अभाव हो तो विश्व व्यवस्था (कॉसमास) बन ही नहीं सकती। इसी प्रकार इस पुस्तक के पाँचों अधिकार एक-दूसरे से अभिन्न हैं। अत: पाठक इन पाँचों अधिकार को सोपान-क्रम से पढ़ें और तभी किसी निष्कर्ष पर आयें। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से भी पंच तत्व का सिद्धान्त बनता है, वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य, पृथ्वी, सूर्य, आकाश-गंगा और उसके गुच्छ से ही दृश्य ब्रह्माण्ड है। भौतिक विज्ञान में इसे क्वान्टम ग्रैविटी का सिद्धान्त कहते हैं। अत: यदि मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, संस्कृति और दर्शन के विद्यार्थी इस पुस्तक के पाँचों अधिकार को ध्यान से पढ़ें तो उन्हें भारतीय संस्कृति की एक नयी दृष्टि भी मिलेगी, जो उनके पाठ्यक्रम में कहीं उपलब्ध नहीं है।

मेरी दृष्टि से इस पुस्तक में समाज, संस्कृति और धर्म की अवधारणाओं को जिस गहराई से प्रस्तुत किया गया है वैसा विरले ही किसी पाठ्य-पुस्तक में उपलब्ध हो। कोई भी जिज्ञासु जो सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला, धर्म, पुरुषार्थ, भोग, मोक्ष तथा विश्व संस्कृति के स्वरूप को नयी दृष्टि से समझना चाहता हो उसके लिए **एक विश्व : एक संस्कृति** ज्ञान का भण्डार है, उच्चकोटि का साहित्य है जिसमें पुरानी अवधारणाओं का नवीनीकरण हुआ है।

निर्भीक एवं स्पष्टवादी लेखन ने इस पुस्तक में कहीं-कहीं अप्रिय प्रसंग उठाया है, किन्तु पाठक के लिए लेखक की भावना नहीं उसका ज्ञान ही महत्वपूर्ण है। हमें आशा है कि कट्टरपंथी धर्मावलम्बी एवं उत्तर आधुनिकतावादी इस पुस्तक को धैर्य एवं गम्भीरता से पढ़ेंगे। लेखक ने अपने ग्रन्थ को समर्पित किया है 'पूरी प्रबुद्ध भारतीयता' को जहाँ सभी धर्मों के अनुयायी बसते हैं।

इस पुस्तक को सुरुचिपूर्ण ढंग से तैयार करने का श्रेय विश्वविद्यालय प्रकाशन को है। विद्वान प्रकाशक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने प्रकाशकीय अभिमत लिखकर प्रस्तावना की औपचारिकता पूरी की है।

— **डा० बैद्यनाथ सरस्वती,** वाराणसी

साधना और सिद्धि

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

$9'' \times 5\frac{3}{4}$ पृष्ठ : 306 मूल्य : 250.00

ISBN : 81-7124-332-0

साधना और सिद्धि संस्कृत वाङ्मय के प्रसिद्ध लेखक शोधी डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का अद्यतन ग्रन्थ है। पुस्तक योग साधना और उससे प्राप्त सिद्धियों का विस्तृत विवरण युक्त है। भारत के सभी धर्म सम्प्रदायों ने योग साधना की है। योग विद्या को ही गुह्य विद्या, रहस्य विद्या कहते हैं। योग अन्तर्मुखी विज्ञान है। भौतिक विज्ञान बाहरी एवं दृश्य विश्व को जानने का साधन है। योग विद्या अन्तर के संसार से परिचित होने की प्रक्रिया है। योग विज्ञान की प्रयोगशाला प्रत्येक व्यक्ति के भीतर है। भारतेतर धर्मों में विश्वास की प्रधानता है। पैगम्बर की बात को मानो। पैगम्बर ने अन्तिम सत्य कहा है। पैगम्बर की बातों में किसी भी स्तर पर अविश्वास सम्भव नहीं है। अविश्वासी के लिए उन धर्मों में कोई जगह नहीं है। भारत के सभी धर्म-पैगम्बर या तो मानते नहीं। मानते हैं तो उसे प्रयोग के द्वारा मानो। प्रयोग के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। वह तुम्हारे पास है। वह बिना किसी खर्च के मिलता है। खर्चा छोड़ छुड़ाके मिलता है। भौतिक विज्ञान की पढ़ाई कठिन है। खर्चे वाली है। अत्यन्त मेधावी के लिए है। तुम्हारे ज्ञान को कोई लेकर तुम्हारी हत्या भी कर सकता है। करता है। आज वैज्ञानिकों के पवित्र शोधों का विश्वनाश के लिए उपयोग हो रहा है। विज्ञान ने रेल भी बनाया। रेल गिराने का यन्त्र भी बनाया।

योग विज्ञान की खरीद बिक्री सम्भव नहीं। इसका दुरुपयोग भी नहीं हो सकता। कभी हुआ भी तो अत्यन्त सीमित दायरे में होगा। उससे दूसरे का नुकसान बाद में होगा। पहले योगी का पतन हो जायेगा। योग विभूतियाँ अवश्य देता है। किन्तु विभूतियाँ योगी का योग छीन लेती हैं। उसे योगासन से गिरा देती हैं। योगी दुर्दशाग्रस्त हो जाता है। इसकी अपेक्षा भौतिक विज्ञान आरम्भ से ही साम्राज्यवादी रहा है। भौतिक विज्ञान प्रकृति के दोहन और नाश की उपज है। योग विज्ञान प्रकृति के साथ चलता है। आगे चला जाता है। प्रकृति को परमात्मा मान उसकी पूजा करता है। आज स्थिति बिल्कुल चरम पर पहुँच गयी। एक ओर विज्ञान के ध्वंसक यन्त्र हैं तो दूसरी ओर विज्ञान के यन्त्रों से पृथ्वी के नाश का संकट उपस्थित हो गया है। भौतिक विज्ञान जिस डाल पर बैठा है, उसे ही काट रहा है। अपने ही घाव को काट कर तृप्त होना चाहता है। भौतिक विज्ञान ने दुनिया को भयानक मोड़ पर पहुँचा दिया है। लगता है भौतिक विज्ञान का विकास चक्र पूरा हो गया है। दुनिया का प्रत्येक देश भौतिक विज्ञान के चरम से चिन्तित है। लौटना चाहता है। किन्तु लौटे कहाँ? कहाँ है वह सुरक्षित स्थान जहाँ शान्ति मिले? भोग में शान्ति नहीं है। भोग तो स्वयं में रोग है। दूसरों को भी रोगी बनाता है।

अब एक ही उपाय है। भोग को छोड़ कर योग को पकड़ो। बहुत देर से देह देख रहे हो। अब भीतर भी देखो। भीतर आत्मा है। परमात्मा है। न जाने उसका क्या नाम है? किन्तु वह है। उससे परिचय भी सुख देगा। वह तुम हो। वह तुम्हारा है। अत: योग का अर्थ है अपने से परिचय स्वस्वरूपानुसन्धान। योग स्मृति कराता है। अपनी स्मृति। जिसके लिए अतना ताम-झाम कर रहे हो। उसकी स्मृति यह ग्रन्थ योग विद्या का सांगोपांग ग्रन्थ है। करीब पौने-तीन सौ पृष्ठों में योग विद्या की सभी पद्धतियों का ज्ञान कराया गया है। संसार के लोग योग जानना चाहते हैं किन्तु उनकी कठिनाई है।

एक तो योग के अधिकांश ग्रन्थ संस्कृत में है। वहाँ भी किसी एक पद्धति का विवेचन है। लेखक द्विवेदी का ग्रन्थ हिन्दी में है। योग के सभी सम्प्रदायों की पद्धतियों का परिचय दिया गया है। यहाँ तक कि अभी हाल में बर्मा से लौटी विपश्यना को भी बताया गया है। संस्कृत के उद्धरणों को उबाऊ न देकर संयम से दिया गया है। प्राय: लोग लम्बे-लम्बे उद्धरणों से ऊबते हैं। विषय की विवेचना भी शिथिल हो जाती है। द्विवेदीजी उद्धरण की मात्रा से परिचित हैं। इन उद्धरणों के भी दो उद्देश्य हैं—1. अपनी विवेचना को प्रामाणिक और पुष्ट करना, 2. मूल शास्त्र से परिचय कराना। सभी उद्धरणों के ग्रन्थों के नाम, अध्याय, संख्या आदि विध सम्मति हैं।

पूरी पुस्तक दस अध्यायों में विभक्त है। अध्याय-१ भूमिका भाग है। इसमें योग का अर्थ, स्वरूप, आठ अंगों का परिचय, विधियाँ आदि का संक्षिप्त परिचय है। इसी में शरीर के भीतर के पाँच कोशों की चर्चा है। आगे अध्यायों में इन्हीं पाँच कोशों की विस्तृत चर्चा है। सभी योगासनों और शुद्धि क्रियाओं को अन्नमय कोश का भाग बताया है। इसके पहले दूसरे अध्याय में स्थूल शरीर में स्नायु संस्थान, तन्त्रिका आदि का परिचय है। इसी अध्याय में चक्रों का भी वर्णन है। अन्नमय कोश योगासन है। चौथा अध्याय प्राणमय कोश का है। इसमें प्राणायाम के विभिन्न रूप बताए गये है। राजयोग भी, हठयोग भी। अनेक मुद्राएँ भी हैं। मनोमय कोश के दो खण्ड हैं। एक खण्ड में प्रत्याहार एवं धारणा है। द्वितीय खण्ड ध्यान सम्बन्धी है। इसी में बौद्ध, जैन, विपश्यना का उल्लेख है। विज्ञानमय कोश अन्त:करण चतुष्टय से सम्बद्ध है। आनन्दमय कोश का सम्बन्ध समाधिक से है। नवम् अध्याय ज्योति, दर्शन, समाधि का है। इसी कुण्डलिनी शक्ति में जागरण की प्रक्रिया है। दशम रोगों के उपचार का अध्याय है।

जीवन के तीन आधारों को समझाया गया है। वे हैं—आहार, स्वप्न (नींद) और ब्रह्मचर्य (संयम)। स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर को समझाया गया है। शरीर का यह विभाजन केवल भारत की विशेषता है। भोजन की तीन विशेषता होनी चाहिए—हित, मित और मैथ्य। हित का अर्थ स्वास्थ्य का भोजन। मित अर्थात् थोड़ा भोजन। मैथ्य पवित्र कमाई से पवित्र देश-काल में बना भोजन। दीर्घ जीवन के लिए अनुभवी दीर्घजीवियों के अठारह सूत्र हैं।

लेखक के समझाने की विधि अत्यन्त सरल है। आसन और प्राणायाम द्वारा स्थूल शरीर को हृष्टपुष्ट किया जाता है। धारणा और ध्यान से मन और बुद्धि रूपी सूक्ष्म शरीर को परिष्कृत किया जाता है। समाधि द्वारा लिंगरूपी कारण शरीर को परिष्कृत किया जाता है। योग में कोशिकाओं में चर्चा प्राय: नहीं होती है। किन्तु लेखक कोशिकाओं के महत्व को प्रकाशित करता है। मानव शरीर में छ: सौ खरब कोशिकाओं के होने का अनुमान है। अधिकतर पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी शब्दरूप कोष्ठकों में दिये गये हैं।

इस प्रकार के प्रयत्नों से सभी प्रकार का लाभ

हुआ है। भारत के विश्वविद्यालयों में प्राय: पश्चिमी मनोविज्ञान ही पढ़ाया जाता है। भारत के योग विज्ञान की पूर्ण उपेक्षा है। फलत: प्रत्येक व्यक्ति दो मन रटे हैं। इस पुस्तक में भी दो मनों का उल्लेख है। दो मन की कल्पना अर्थहीन है। मन के ठीक प्रक्रिया स्वरूप को ऐसे ही ग्रन्थों से समझा जा सकता है। पश्चिमी मनोविज्ञान के मुकाबले यह ग्रन्थ एक नवद्वार का उद्‌घाटन करता है। पश्चिम खिड़की नहीं। भारत का दरवाजा है। इस ग्रन्थ और ऐसे अनेक ग्रन्थों की आवश्यकता है। जो भोगी मनुष्य को संकट से बचा सके।

डॉ० द्विवेदी की इस पुस्तक का स्वागत होगा। पाठ्य-पुस्तक के रूप में मान्यता मिलेगी। क्योंकि योगशास्त्र (भारत मनोविज्ञान) का पाठ्य ग्रन्थ है। इससे उनका भी लाभ है जो मनोविज्ञान को केवल फ्रायड युग आदि से जोड़ते हैं। **—डॉ० युगेश्वर**

काशी का इतिहास

डॉ० मोतीचन्द्र

डायरेक्टर, प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम
मुम्बई

तृतीय संस्करण

भूमिका : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

काशी उस सभ्यता की सदा से परिपोषक रही है, जिसे हम भारतीय सभ्यता कहते हैं और जिसके बनाने में अनेक मत-मतान्तरों और विचारधाराओं का सहयोग रहा है। यही नहीं, धर्म, शिक्षा और व्यापार से वाराणसी का घना सम्बन्ध होने के कारण इस नगरी का इतिहास केवल राजनीतिक इतिहास न होकर एक ऐसी संस्कृति का इतिहास है जिसमें भारतीयता का पूरा दर्शन होता है। लेखक ने इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी बिखरी हुई सामग्री को जोड़कर इस इतिहास का निखरा स्वरूप खड़ा किया है। रोचक सामग्री का भी प्रचुर उपयोग करके नगर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखक की दृष्टि में इतिहास केवल शुष्क घटनाओं का निर्जीव ढाँचा नहीं है, उसमें हम समाज की प्रक्रियाओं तथा धार्मिक अभिव्यक्तियों का भी पूर्णरूप से दर्शन कर सकते हैं। अपने विषय की एकमात्र कृति तो यह है ही।

तृतीय संस्करण में काशी के 18वीं-19वीं शताब्दी के अत्यन्त दुर्लभ चित्र सम्मिलित किये गये हैं।

रायल अठपेजी 10'' × 6$\frac{1}{2}$ पृ० : 404
दुर्लभ चित्र : 40 मूल्य : 650.00

ISBN : 81-7124-298-7

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक

डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव

कला और साहित्य दोनों ही जीवन से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है तथा कला भी समाज को प्रतिबिम्बित करती है। कला संस्कृति की यथार्थ की प्रस्तुति ही नहीं वरन् यह संस्कृति के आदर्शों की सबसे प्रबल और सजीव अभिव्यक्ति भी है। संस्कृति के मूल तत्त्वों को कला और साहित्य दोनों ही हृदयस्पर्शी रूप में व्यक्त करते हैं। साथ ही दोनों कुछ बिम्बों और प्रतीकों का सहारा लेते हैं। साहित्य की तुलना में कला में इन बिम्बों, प्रतीकों की भूमिका अधिक प्रभावोत्पादक है। भारतीय कला की विशेषता उसके बिम्ब व प्रतीक ही हैं, इसकी परम्परा और संस्कृति की सही पहचान के लिये इनका अध्ययन आवश्यक है। भारतीय कला के विदेशी अध्येताओं ने कला का सतही विश्लेषण करके अपने कार्य की इतिश्री मान ली। यही कारण है कि वे भारतीय कला के साथ न्याय नहीं कर सके।

भारत में इस प्रकार के अध्ययन का श्रीगणेश कुमारस्वामी, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के नामों से जुड़ा है। डॉ० विमलमोहिनी ने गहन अध्ययन और मनन के द्वारा अपने शोध प्रबन्ध 'प्राचीन भारतीय कला के कतिपय मांगलिक प्रतीक' को सम्पादित किया है। यह इस विषय पर पहली क्रमबद्ध विश्लेषणात्मक प्रस्तुति मानी गई है।

मैं आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ भारतीय कला के जिज्ञासुओं एवं मर्मज्ञों दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। **— हरिवंशराय बच्चन**

पृ० : 152 (डिमाई 8) मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-313-4

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु

डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल

प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कला के विकास की भारतीय परम्परा का इतिहास अति प्राचीन है। ताम्रप्रस्तर-युगीन सैन्धव सभ्यता से लेकर ऐतिहासिक संस्कृति के कालक्रम में इस देश की कलाधारा अपने अजस्र प्रवहमान स्वरूप की साक्षी है। वैदिक कालीन साहित्य में प्रतिबिम्बित कलात्मक विचारों तथा क्रिया-कलापों के लिए पुरातात्त्विक प्रमाणों का अभी अभाव है। तो भी, उसी परम्परा का आगामी प्रस्फुटन शैशुनाग-नन्द, मौर्य, शुंग, आन्ध्र-सातवाहन, शक-कुषाण, गुप्त आदि राजवंशों के युगों के भवन-निर्माणों, स्मारकों एवं कलाओं के बहुमुखी उन्नयन में देखा जाता है। इन सभी कालखण्डों के लिए प्राप्त सामग्री अत्यन्त विस्तृत तथा व्यापक है। प्रस्तर-शिल्प, मृन्मय शिल्प, धातु-शिल्प, चित्रकला, अलंकरण-आभूषण, मणि-शिल्प, दंत-शिल्प, काष्ठ-शिल्प की विविध शैलियों के अध्ययन के लिए साक्ष्यों का न केवल साहित्यिक प्रत्युत पुरातात्त्विक संभार भी बहुमुखी और बहुमूल्य है। संस्कृति के विविध पक्षों में भौतिक स्तर पर हुई उपलब्धियों और तत्सम्बन्धी आदर्शों की समकालिक अभिव्यक्ति जानने-परखने के लिए कला अप्रतिम साधन है।

आकार : 7.5'' × 10'' पृ० : 468
1115 रेखाचित्र, 24 फलकों में 65 छविचित्र
मूल्य : 650.00

ISBN : 81-7124-313-4

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क

डॉ० आर० गणेशन्

वरिष्ठ तकनीकी सहायक (कलाकार)
भारत कला भवन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

आज की तकनीकी एवम् औद्योगिक विकास में हो रही तीव्रगामी प्रगति; जिसे आधुनिक विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना जा रहा है, के फलस्वरूप भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं का विखण्डन भी साथ ही साथ होना प्रारम्भ हो चुका है। आज हमारा समाज संस्कृति विहीन विकास की ओर उन्मुख होता जा रहा है। ऐसी दुरावस्था में देश के विविध संग्रहालय एवं सांस्कृतिक आगार ही कला एवं संस्कृति का सम्बन्ध लोक से करा सकेंगे। जीवन को उससे ओत-प्रोत कर सकेंगे। उन्नत सांस्कृतिक परिवेश हेतु मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। वर्तमान परिदृश्य में यह दुरूह कार्य एक सुनियोजित प्रचार एवं जनसम्पर्कीय विधा द्वारा ही सम्भाव्य है। इसी दृष्टिकोण से डॉ० गणेशन् द्वारा लिखित भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क पुस्तक की अभिप्रायपूर्ण प्रासंगिकता है जिसमें विविध स्रोतों से प्राप्त एकत्रित सामग्रियों, प्रमाणों का सूक्ष्मता से विश्लेषण कर दिया गया यथोचित निर्देश, प्रस्ताव एवं सुझाव है जो इनके व्यक्तिगत अनुसन्धान का परिणाम है।

पृ० : 352 अनेक चित्र मूल्य : 400.00

ISBN : 81-7124-301-0

बोलने की कला
(वक्ता, अभिनेता, शिक्षक और जनसामान्य के लिए)

डॉ० भानुशंकर मेहता

रंगमंच पर अभिनय करने, सभा सोसायटी या राजनीतिक मंच पर भाषण करने, कक्षा में छात्रों को पढ़ाने के लिये, ठीक से अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिये बोलने की कला जानना अत्यावश्यक है। सामान्य जीवन में भी शिष्ट व्यवहार और मधुर बातचीत के लिये भी यह कला उपयोगी सिद्ध होगी। अभिनय, भाषण या बातचीत स्मृति और बुद्धि के सहारे चलते हैं तो बहुधा आपको आलेख या निबन्ध, मंच या रेडियो पर पढ़ना भी होता है, वहाँ भी बोलने की कला काम आती है।

बोलने की कला शुद्ध उच्चारण या सही व्याकरण सम्मत भाषा मात्र नहीं है। उसमें उतार-चढ़ाव, बल,

भावाभिव्यंजना, काकु प्रयोग, विश्राम के साथ खड़े होने का कायदा, हाथ और मुख की मुद्रा का रहस्य भी जानना होता है।

बोलने की कला सीखकर व्यक्ति कुशल अभिनेता या भाषणकर्त्ता ही नहीं, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य की कुंजी भी प्राप्त कर लेता है।

यह लघु पुस्तक वाक्सिद्धि का अमोघ मंत्र प्रदान करती है।

आकार : 6.5'' × 10''   पृ० : 218
छात्र संस्करण : 450.00   मूल्य : 250.00

ISBN : 81-7124-299-5

सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध

डॉ० जगदीशसरन माथुर
रीडर, वाणिज्य संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

किसी भी संगठन की सफलता में उसकी जनशक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और इस दृष्टि से सेविवर्गीय या कार्मिक विभाग के दायित्व महत्त्वपूर्ण समझे जाते हैं। इन दायित्वों में प्रमुख रूप से शामिल हैं—विभिन्न पदों पर भर्ती, पदोन्नति के लिए आवश्यक प्रक्रिया का संचालन, कर्मचारियों का स्थानान्तरण एवं नियुक्ति, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन इत्यादि। संगठन की वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सेविवर्गीय विभाग को जनशक्ति आयोजना तैयार करनी होती है। कर्मचारियों के वेतन आदि के भुगतान की व्यवस्था भी इसी विभाग को देखनी होती है। प्रबन्धकों तथा श्रमिक वर्ग के मध्य औद्योगिक सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बने रहें एवं उनके मतभेदों को आपसी विचार-विमर्श से हल कर लिया जाय, इस पर भी सेविवर्गीय प्रबन्धक को नजर रखनी होती है। प्रस्तुत पुस्तक 'सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध' में इन्हीं विषयों से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं, सिद्धान्तों, दृष्टिकोणों इत्यादि को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का मूल उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयों में बी०कॉम० अथवा एम०कॉम० में इस विषय विषय का अध्ययन कर रहे छात्रों, प्रबन्ध या व्यावसायिक प्रशासन में डिप्लोमा या कोई अन्य कोर्स कर रहे छात्रों, प्रबन्धकों, श्रमिकों एवं उन सबके लिए जो इस विषय में रुचि रखते हैं, सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्धों के बारे में आवश्यक जानकारी तथा विषय सामग्री उपलब्ध कराना है। मातृभाषा हिन्दी में इस विषय पर पुस्तकों का अभाव-सा रहा है। इस अभाव को दूर करने की दिशा में लेखक का यह छोटा-सा प्रयास है।

रायल 340 पृष्ठ   मूल्य : 160.00

ISBN : 81-7124-288-X

BOOK REVIEW

The Hindu, Tuesday, April 29, 2003

HINDI

MAHABHARAT KA KALA-NIRNAYA

Dr. Mohan Gupta

224 pages   Rs. 300.00

ISBN : 81-7124-292-8

IN THIS book the author has discussed the date of the Mahabharata on a scientific basis and arrived at the conclusions that his labours indicate. The historicity of the Mahabharata events happening very near the Kaliyuga has been generally accepted now by scholars including Western researchers and the subject of the determination of its age has assumed a fresh cultural importance now.

He adopts a multi-pronged approach to his task coordinating the evidence of our Puranas on the time-spreads of rule of ancient royal dynasties and the dates he works out based on several planetary positions mentioned in the Mahabharata itself, besides known historical facts. He has given us a full calendar of the Mahabharata time, fixing the exact dates of the 18-day war, the lives of the Pandavas, and their exile and Krishna's birth and his passing away with which Kaliyuga is stated to begin.

The date he has fixed for the Mahabharata war is 1952 B.C. and he points out that this is confirmed by Puranic genealogies which count up to this date by taking the 1500 years interval between King Parikshit (Arjuna's grandson) and Mahapadmananda, plus 100 years of the rule of the Nandas, plus 322 years, the historical date of Chandra Gupta Maurya, all before the birth of Christ. There is further historical piece of evidence that the Sarasvati river is seen by Balarama to have dried-up (in the Mahabharata) and scientific investigations date this drying up around 1900 B.C. leaving us to fix the composition of the epic after this date.

The author's display of original thinking, critical judgment in weighing probabilities, and scholarly toil elicit our praise. He has provoked discussion by scholars on his methods and conclusions in future seminars. The book lacks an index of subjects for easily locating points one wishes to recall. The 14 appendices provide much supporting information with lists of kings, sky positions, and some clarifications.

– J. Parthasarathi

The Hindu, Tuesday, May 13, 2003

BHARATIYA SANGRAHALAYA EVAM JANSAMPARK

R. Ganesan

9" x $5\frac{1}{2}$ 320 pages, 48 plates Rs. 400.00

ISBN : 81-7124-301-0

INDIAN MUSEUMS have a long way to go in developing themselves as dynamic reference-centres, popular educators, fully responsive to the needs and aspirations of the societies around them. They have remained much the same as when they were started in the 19th century by the British Government Collections of artefacts researched by the scholarly few. People at large still view them as only storehouses of curiosities not of relevance to their daily activities.

In the present age the learning connected with museums has made great stride. But knowledge of these advances is to be had only from journals and publications in English and other European languages and remains difficult of access to Indian readers.

The author, working in Bharat Kala-Bhawan, Benares Hindu University, says he has written this book to supply the felt need in the people's language to up-date their knowledge suggesting the ways and means of development of Indian museums.

There are 12 chapters enlarging on how museums can harness modern media of communication to their propaganda besides their own resources of involving the public through their various activities like lectures, discussions, training workshops, cultural programmes, tours and competitions.

Conceived as a Hindi-text book on 'museum science' it has suggestive questions on the chapters at the end, besides a bibliography and illustrations of publicity material of various no-table Indian and British museums. It will be useful as a theoretical practical helpbook to those interested in museum activities.

– J. Parthasarathi

DAISHIK SHASTRA

(Bharatiya Polity and Political Science)

By

Badrishah Thulgharia

Translated By : Ashok Bhandari

Rs. 250.00

ISBN : 81-7124-316-9

Daishik Shastra is a unique work that present the quintessence of *Bharatiya* Civilisation, Culture, Philosophy, Economics, Political Science and *Dharma Shastra* (Science of Sustaining Code). When the western Civilisations and Cultures were busy over-powering this country and our people were fighting a fierce battle for attaining freedom from the alien Rule, Shri Badrishah Thulagharia wrote *Daishik Shastra* and enunciated the ideals of *Bharatiya* way of life by arousing self-consciousness of his countrymen, so that the special characteristics of our ideology and conduct constantly remain before them, inspire them and help them in determining the future course of their struggle.

Revealing as it does the vital core of *Bharatiya* Political Science, this literary work would enlighten every intellectual, statesman, administrator and citizen about the glorious traditions of our nation and build up their morale by arousing their national awareness.

"I have read yur *Daishik Shastra* with great pleasure. My view is entirely in accord with yours and I am glad to find that it has been forcefully put forward by you in Hindi."

Bal Gangadhar Tilak

STUDIES IN INDIAN ART

By

Vasudeva Sharan Agrawal

The book *Studies in Indian Art* is a collection of papers on the subject of Indian Art contributed to various Journals. They cover a wide range of subjects as sculpture, architecture, painting, arts and aesthetics. Indian art has a long history and is a subject of great importance as expressing the soul of Indian civilisation. Its value is equal to that of Indian religion, philosophy and literature, which are all to be tapped as perennial sources for the understanding of Indian art-forms.

Size : 10"x7.5" 304 pages, 7 plates

Rs. 400.00

ISBN : 81-7124-335-5

THE RISE AND GROWTH OF HINDI JOURNALISM

By

Ram Ratan Bhatnagar

Editor

Dr. Dhirendra Nath Singh

This is the first authentic history of Hindi Journalism in English, produced by Dr. Ram Ratan Bhatnagar. The book presents the History of Journalism from 1826-1945 and formed that Hindi Journalism was a part of Hindi Literature. The author has tried to deal with the rise and growth of Hindi Journalism in as much detail as was possible adding facts after facts and analysing and reviewing them in the light of a full background of social, religious, literary and political forces and supplementary estimate with cuttings from both ancient and modern journals and newspapers.

This study would pave way for further research in the different periods and branches of Hindi journalism, and prove a fruitful companion book to the History of Modern Hindi Literature.

Size : 10"x7.5" 556 pages Plates : 40

Rs. 800.00 $ 25 £ 15

Paperback Rs. 500.00

ISBN : 81-7124-327-4

KASHI KA ITIHAS

By

Dr. Moti Chandra

KASHI i.e. VARANASI is an ancient celestial and classical city. Varanasi which represents early history, culture, religion and Indian society. The book presents political and social history of Varanasi from Vedic to Modern period. The book is widely illustrated with rare photographs of early 19th century.

Size : 10"x 6.5" 404 pages **Rs. 650.00**

ISBN : 81-7124-298-7

INDIAN ARTIFICIAL SATELLITES

By

S.N. Ghosh

Former Sir Rashbehary Ghose Professor of Applied Physics
Calcutta University

After World War II science and technology improved in India to a great extent. In two fields the advancements are comprehensive, namely in Nuclear Physics and Space Physics. In this book the advancement of Space Physics in India is considered in detail.

Size : 9"x 5.75" 200 pages, 2 plates

Rs. 200.00

ISBN : 81-7124-316-9

समाज-दर्शन की भूमिका

डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव

हिन्दी में मौलिक रूप से लिखी गयी अपने विषय की प्रथम कृति है। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य भौतिकवादी विचारधारा का उच्छेदन एवं अध्यात्मवादी विचारधारा का समर्थन करना है। पुस्तक दर्शन, समाजशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र के आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, बी०ए० तथा एम०ए० के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

पृ० : 12 + 452 (डिमाई) मूल्य : 150.00

ISBN : 81-7124-311-8

प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ

सम्पादक

डॉ० कुमार पंकज

विभिन्न परिवेशों का प्रतिनिधित्व करती प्रेमचंद की 12 प्रमुख कहानियाँ साथ में इन कहानियों पर डॉ० पंकज की 34 पृष्ठों में समीक्षात्मक टिप्पणी।

पृ० : 152 (डिमाई 8) मूल्य : 60.00

ISBN : 81-7124-

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक एक अध्ययन

डॉ० आशारानी त्रिपाठी

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक अपनी दार्शनिक विषय ग्राह्यता एवं नाट्य विधानों के अनोखे निबन्धन के कारण सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रबोध चन्द्रोदय के अतिरिक्त प्राय: सभी प्रतीकात्मक नाटकों में नाटककारों के नाटकीय सौष्ठव को विस्तृत करके दार्शनिक अभिव्यक्ति को चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। इस पुस्तक में उन्हीं प्रतीकात्मक नाटकों का अध्ययन किया गया है, जिसमें दार्शनिकता तथा नाटकीयता के मध्य सन्तुलन का उचित नियोजन किया गया है।

पृ० : 232 (डिमाई) मूल्य : 225.00

ISBN : 81-7124-322-3

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

संस्कृत साहित्य की परम्परा के विषय में बनी हुई अनेक भ्रान्तियों को यह पुस्तक तोड़ती है तथा इस साहित्य में प्रतिबिम्बित उदात्त जीवन मूल्यों तथा चिन्तन परम्पराओं के सन्दर्भ में संस्कृत कृतिकारों के अवदान तथा उपलब्धि तथा सीमाओं पर तेजस्वी विमर्श प्रस्तुत करती है। वैदिक साहित्य से बीसवीं शताब्दी तक विकसित संस्कृत साहित्य की परम्परा का यह आकलन छात्रों, सामान्य पाठकों तथा अनुसंधाताओं के लिए समान रूप से उपयोगी है।

पृ० : 600 सजि. : 350.00 अजि. : 200.00

ISBN : 81-7124-321-5

'स्वदेश' की साहित्य-चेतना

प्रत्यूष दुबे

लोकमान्य तिलक की प्रेरणा से 6 अप्रैल 1919 को श्री दशरथप्रसाद द्विवेदी ने गोरखपुर से 'स्वदेश' निकाला। यह देश की समग्र संकल्प शक्ति और गतिशील चेतना का वाहक था। राष्ट्रीयता की उद्‌बोधक गतिवधियों और साहित्यिक रचनाओं की समीक्षा। इसकी विशेषता थी। प्रेमचंद, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, रामचन्द्र शुक्ल, रघुपति सहाय आदि प्रमुख लेखकों का इसे सहयोग प्राप्त था। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के सम्पादकत्व में विजयांक के कारण जमानत भी जब्त हो गई थी। उग्रजी का बहुचर्चित नाटक 'लाल क्रांति के पंजे में' पुस्तक में संकलित है। पुस्तक 5 अध्यायों में विभक्त है—1. 'स्वदेश' का इतिहास, 2. 'स्वदेश' में कविता, 3. 'स्वदेश' में नाटक, 4. 'स्वदेश' में कहानी, 5. स्वदेश में आलोचना परिशिष्ट—लाल क्रांति के पंजे में, 'उग्र', क्षात्र धर्म का सौन्दर्य, रामचन्द्र शुक्ल।

पृ० : 164 (डिमाई 8) मूल्य : 150.00

ISBN : 81-7124-339-8

पुरइन-पात

भोजपुरी साहित्य से एक चयन

सम्पादक

डॉ० अरुणेश नीरन ● डॉ० चितरंजन मिश्र

भोजपुरी की श्रेष्ठ गद्य-पद्य रचनाओं का प्रतिनिधि संकलन।

पृ० : 200 (डिमाई) मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-304-5

धूमिल की कविताएँ

सम्पादक

डॉ० शुकदेव सिंह

''कविता-भाषा में आदमी होने की तमीज है।'' ऐसे क्रान्तिकारी कवि धूमिल की प्रमुख रचनाओं का संग्रह, सम्पादक की विस्तृत समीक्षात्मक भूमिका सहित।

पृ० : 140 (डिमाई 8) मूल्य : 80.00

ISBN : 81-7124-320-7

सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म

श्यामसुन्दर उपाध्याय

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म एक दूसरे के विरोधी हैं। कतिपय निहित स्वार्थियों द्वारा प्रचारित किया जा रहा है। किसी ने भी इस पर गम्भीरता से विचार करने का प्रयास नहीं किया। सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों का लक्ष्य एक ही है। दोनों धर्मों की तुलनात्मक समीक्षा बहुत ही सुन्दर-रोचक एवं सहज ढंग से की गई है।

पृ० : 198 (डिमाई 8) मूल्य : 75.00

ISBN : 81-7124-317-7

भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार

डॉ० अनुपम मिश्र

भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाएँ उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। भवानी भाई जैसे जीवन में थे, वैसे ही अपनी कविताओं में भी थे। प्रथम अध्याय उनके जीवनवृत्त पर आधारित है। दूसरे अध्याय में प्रयोगवाद और नयी कविता की पृष्ठभूमि में भवानीप्रसाद मिश्र, तीसरे अध्याय में भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य-प्रतिमानों पर विचार किया गया है। चौथे अध्याय में भवानीप्रसाद मिश्र की इतिहास संवेदना, प्रकृति-चेतना, प्रेमानुभूति, गाँधीवादी दृष्टि और उनके मानवता तथा समाजपरक काव्य विवेक का अध्ययन किया गया है। पाँचवें अध्याय में भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य-प्रवृत्तियाँ उनके अन्य रचनात्मक सरोकारों यथा—शब्द-अर्थ, अलंकृति, संवेदना-समझ, उनके स्वप्न, यथार्थ, मूल्य और चिन्ताओं, उनके काव्य सौन्दर्य, उनके शिल्प सन्दर्भ तथा अन्यान्य काव्यात्मक सरणियों, शक्तियों और सीमाओं की चर्चा है।

अन्तिम अध्याय में मिश्रजी की मूल काव्य-चेतना और उनके काव्यात्मक महत्त्व पर समग्र रूप से प्रकाश डाला गया है।

इस ग्रन्थ में भवानीप्रसाद मिश्र के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पृ० : 164 (डिमाई 8) मूल्य : 160.00

ISBN : 81-7124-345-2

भारतीय समाज एवं संस्कृति परिवर्तन की चुनौती

सम्पादक

सत्यप्रकाश मित्तल

प्राक्कथन

युनेस्को प्रोफेसर डॉ० वैद्यनाथ सरस्वती

भारतीय संस्कृति के इस संग्रह-ग्रन्थ में 42 विद्वानों के विचार संगृहीत हैं। इन विद्वानों में दिवंगत आचार्य नरेन्द्रदेव भी एक हैं, जिनकी स्मृति में गोष्ठी आयोजित कर इस विचार सम्पदा को प्राप्त किया गया। उनके पाँच लेखों का बहुमूल्य समुच्चय इस गोष्ठी का आधार-निबन्ध है जिसे परिशिष्ट में देखा जा सकता है।

ऐतिहासिक कारणों से आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की दौड़ में पिछड़ गये परम्पराप्रिय रूढ़िग्रस्त भारतीय समाज और उसकी विभिन्न संस्थायें तथा समुदाय, जाति-व्यवस्था तथा वर्ण-व्यवस्था, धर्म तथा सम्प्रदाय, नैतिक मूल्य तथा आचार-व्यवहार, ग्राम तथा नगर, परिवार तथा पड़ोस, शिक्षा तथा मनोरंजन आदि सब कुछ द्रुतगति से बदल रहा है।

संस्कृति की परिभाषा और भारतीय संस्कृति के स्वभाव और स्वरूप की विवेचना के अतिरिक्त विद्वानों ने यह बताने का सफल प्रयास किया है कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार इस व्यापक और द्रुतगामी परिवर्तन के समक्ष अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए राष्ट्रीयता, विश्वबन्धुत्व, लोकतन्त्र और सामाजिक समता जैसे नये मूल्यों एवं तत्वों को आत्मसात् करने का प्रयास कर रही है और ऐसा करते हुए उसे किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अत: यह संग्रह भारतीय संस्कृति और समाज को समझने की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ बन गया है।

पृ० : 380 (डिमाई 8) मूल्य : 380.00

ISBN : 81-7124-347-9

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप

बच्चन सिंह

इलेक्ट्रॉनिक युग में पत्रकारिता पूर्णत: व्यावसायिक हो गयी है, इसका आन्तरिक और बाह्य दोनों ही क्षेत्रों का स्वरूप निरन्तर बदलता जा रहा है। इसी को दृष्टि में रखते हुए पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर अनुभवी पत्रकार ने प्रशिक्षु पत्रकारों के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है।

पृ० : 242 (डिमाई 8) मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-330-4

हिन्दी पत्रकारिता

भारतेन्दुपूर्व से छायावादोत्तर काल तक

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

30 मई 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन से हिन्दी पत्रकारिता का शुभारम्भ होता है। भारतेन्दु ने इस पत्रकारिता में भाषाजन्य संस्कार करते हुए, साहित्य सृजन किया, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, जिनमें महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती', प्रेमचंद का 'हंस', जयशङ्कर प्रसाद का 'इंदु', निराला का 'मतवाला' आदि प्रमुख हैं। छायावादोत्तर काल में अज्ञेय का 'प्रतीक' तथा अन्य पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। स्वतंत्रतापूर्व तक हिन्दी पत्रकारिता का विवरण तथा समीक्षा इस पुस्तक की विशेषता है। हिन्दी पत्रकारिता ने हिन्दी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक पीठिका प्रस्तुत करती है।

मूल्य : 80.00

ISBN : 81-7124-354-1

बृहत श्लोक संग्रह

सम्पादक

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

अवधेशप्रसाद सिंह

प्राच्य एवं पाश्चात्य जगत के विभिन्न धर्मों के महान लोकमंगलकारी श्लोकों का संग्रह।

भारतीय वेद, पुराण, उपनिषद तथा महाभारत आदि से संस्कृत के श्लोकों, का हिन्दी रूपान्तरण के

साथ संकलन। बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि धर्मों का हिन्दी एवं अंग्रेजी में रूपान्तरण तथा भारत के बाहर के धर्मों, जैसे चीनीय, पारसी, इस्लामी, यहूदी, ईसाई आदि धर्मों के अंग्रेजी उद्धरण तथा हिन्दी रूपांतरण। विश्वधर्म सूक्तियों का अभूतपूर्व संग्रह।

पृ० : 302 (डिमाई 8) मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-321-5

2003 में प्रकाशित ग्रन्थ

इतिहास-संस्कृति-कला

एक विश्व : एक संस्कृति *डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी* 80.00

भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती *सत्यप्रकाश मित्तल* 380.00

Daishik Shastra *Badri Shah Thuldharia* 150.00

Studies in Indian Art *Vasudeva Sharan Agrawal* 400.00

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क *डॉ० आर० गणेशन* 400.00

महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 300.00

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 650.00

काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00

जैन कलातीर्थ : देवगढ़ *प्रो० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी, डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा* 350.00

इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* 000.00

सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० ऊषारानी बंसल* 60.00

अध्यात्म, योग तथा धर्म दर्शन

साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00

बृहत श्लोक संग्रह *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00

सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00

साहित्य-समीक्षा

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा* 320.00

'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे* 150.00

अक्षर बीज की हरियाली *डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ* 180.00

भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00

प्रसाद स्मृति वातायन *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00

क्रान्तिकारी कवि निराला *डॉ० बच्चन सिंह* 120.00

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सराफ* 120.00

भोजपुरी साहित्य

बदमाश दर्पण (तेग़ अली) *सं० श्रीनारायणदास* 60.00

भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* 400.00

पुरइन पात (पाठ्य ग्रन्थ) *सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन', चितरंजन मिश्र* 80.00

पुरइन पात (भोजपुरी साहित्य संचयन) *सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन', चितरंजन मिश्र* 200.00

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00

चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00

कहानी

प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ *सं० डॉ० कुमार पंकज* 80.00

प्रश्नचिन्ह तथा अन्य कहानियाँ *अनीता पण्डा* 80.00

नाटक

मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन) *अनिन्दिता* 150.00

देवयानी (पौराणिक नाटक) *डॉ० एम० चन्द्रशेखरन् नायर* 20.00

पत्रकारिता

The Rise & Growth of Hindi Journalism U *Dr. Ram Ratan Bhatnagar Ed. by Dr. Dhirendra Nath Singh* 800.00

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *बच्चन सिंह पत्रकार* 200.00

हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* 80.00

अभिनय कला, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय वर्मा* 150.00

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिन्तन *कृष्णकुमार सोमानी* 75.00

भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती *सत्यप्रकाश मित्तल* 380.00

विज्ञान

Indian Artificial Satellite *Dr. S.N. Ghosh* 250.00

पूर्व प्रकाशित अन्य प्रमुख ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00

नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00

सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00

सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00

Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy U *N.L. Gupta* 400.00

योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00

पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00

Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00

योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00

करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00

महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00

योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00

भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00

महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00

शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00

महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00

पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00

कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00

पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00

उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कार्यां* 150.00

सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00

सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00

वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00

मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00

वह रहस्यमय कापालिक मठ '' 180.00

तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी '' 180.00

मृतात्माओं से सम्पर्क '' 200.00

तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) '' 250.00

तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) '' 300.00

मरणोत्तर जीवन का रहस्य '' 300.00

परलोक विज्ञान '' 300.00

कुण्डलिनी शक्ति '' 250.00

जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00

सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00

वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00

श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन	*शारदाप्रसाद सिंह*	40.00
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे*		80.00
कृष्ण का जीवन संगीत	*डॉ० गुणवंत शाह*	300.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन	*शिवेन्द्र सहाय*	65.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*अनु० ना० वि० सप्रे*	180.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में)	*श्री श्यामाचरण लाहिड़ी*	375.00
संत कबीर और भगताही पंथ	*डॉ० शुकदेव सिंह*	130.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी)	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर)	*सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	150.00
कृष्णायन	*रामबदन राय*	200.00
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	100.00
अनंत की ओर	*अशोककुमार*	90.00
रामायण-मीमांसा	*करपात्रीजी महाराज*	250.00
भक्ति-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	190.00
श्रीभागवत-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	70.00
श्रीराधा-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50.00
भ्रमर-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	90.00
गोपी-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	200.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मकपरक ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना	80.00
क्रम-साधना	80.00
अखण्ड महायोग	80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग	250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	100.00
श्री साधना	50.00
दीक्षा	80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा	100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2)	80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)	50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)	300.00
कविराज प्रतिभा	64.00
ज्ञानगंज	60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना	50.00
परातंत्र साधना पथ	40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1)	200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2)	120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	40.00
काशी की सारस्वत साधना	35.00
भारतीय साधना की धारा	30.00
तांत्रिक वांगमय में शाक्त दृष्टि	100.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	120.00
कविराज प्रतिभा	64.00

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित)	*दुर्गाशंकर अवस्थी*	120.00
योग के विविध आयाम	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	40.00
दीर्घायु के रहस्य	*डॉ० विनयमोहन शर्मा*	50.00
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए	*डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय*	50.00
साधना और सिद्धि	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	250.00

पुस्तकें प्राप्त

खिल-खिल जाना

मनका उजाला (काव्य संग्रह)

बृजेश सिंह' कुमार' 30.00

प्रयास प्रकाशन

सी 62, अजेय नगर, बिलासपुर

धर्मेन्द्र गुप्त की प्रमुख कृतियाँ

एक नाम : झीनी (कहानी संग्रह) 80.00

सहारा किस किसका (कहानी संग्रह) 100.00

महात्मा गाँधी की आत्मकथा : प्रथम भाष्य

गाँधी के जीवन प्रसंगों पर आधारित110.00

आसेतु प्रकाशन

274 राजधानी एन्क्लेव, रोड नं० 44,

पो० शकूर बस्ती, दिल्ली-110 0034

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 4 **जुलाई 2003** **अंक : 7**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिन्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : vvp@vsnl.com ●
sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082